स्वस्थ चेतना का वाहक

सहयोग राशि
30/- ₹

मई 2026

क्रान्ति

मासिक

नशे का अभिशाप

- नशा : जीवन, समाज और आत्मा का दुश्मन
- स्वतंत्रता का भ्रम और मानवता का मौन विनाश
- नशा : पूर्ण निषेध ही एकमात्र समाधान



WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Sermad Traders

Agriculture Input Dealer

B.H. Road, Tarikere, Chikkamagalore District



جس کو اللہ ہدایت دینے
کا فیصلہ کرتا ہے اس کے
سینے کو اسلام کے لیے
کھول دیتا ہے۔ (مشکوٰۃ)



प्रधान संपादक
डॉ. फ़रहत हुसैन
kantieditorial@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 30/- रु॰ एक वर्ष 350/- रु॰
पांच वर्ष 1500/- रु॰ आजीवन रु॰ 5000/
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025
चेक / ड्राफ़्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत
ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
Printer : Akhilesh Singh
Press : AARYA PRINTERS
201, Ground Floor, DSIDC Complex
Okhla Industrial Area phase-1,
New Delhi-110020
Editor : Shibli Arsalan

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

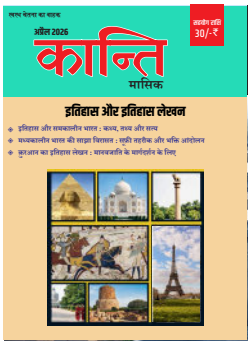
विचार सौरभ **डॉ. कौसर यज़दानी नदवी**

आधा मुसलमान

लोग इसे सच्ची घटना समझते हैं
वास्तविकता क्या है नहीं मालूम,
बहरहाल इसमें शिक्षाएं हैं, हम सबके लिए,
इसलिए पेश करने की जुर्अत की जा रही है।
घटना 1857 के बाद की है,
जबकि प्रथम स्वतंत्रता संग्राम विफल हो चुका था।
अंग्रेज़ मुसलमानों के जानी दुश्मन बने हुए थे।
जामा मस्जिद क्षेत्र, दिल्ली में
क़रीब सत्तर हज़ार मुसलमानों को शहीद किया जा चुका था।
जो बच रहे थे, उनमें से बहुतों को पकड़-पकड़ कर
जेलों में बन्द किया जा रहा था
इसी बीच अंग्रेज़ सिपाहियों ने
उर्दू के महान कवि ग़ालिब को भी पकड़ लिया
और अंग्रेज़ मजिस्ट्रेट के सामने पेश कर दिया।
मजिस्ट्रेट ने ग़ालिब को मुख़ातिब किया, पूछा
'टुम मुसलमान हो ?'
ग़ालिब बोले, 'हुज़ूर! आधा मुसलमान हूं।'
मजिस्ट्रेट बोला, 'वॉट ? यह कोर्ट है, टुम क्या बकटा है ?'
ग़ालिब बोले, हुज़ूर! मैं सच बोल रहा हूं।
पूरा मुसलमान तो वह होता है, जो
हर दिन पांच वक़्त की नमाज़ पढ़े,
रमज़ान महीने का रोज़ा रखे, ख़ैरात करे, ज़कात दे,
शराब की एक बूंद भी हलक़ के नीचे न उतारे,
न जुआ खेले, न जुआरी बने,
लेकिन मैं, मैं तो.....
नमाज़ ही नहीं पढ़ता,
रोज़े रखना मेरे बस का नहीं,
ख़ैर-ख़ैरात की मुझे तौफ़ीक़ नहीं,
शराब भी पीता हूं,
कभी-कभी जुआ भी खेल लेता हूं।
तो मैं कैसा मुसलमान, मुझे तो आधा मुसलमान समझा जाए,
ग़ालिब की इस बात पर मजिस्ट्रेट चौंका ही नहीं,
बल्कि अंग्रेज़ सिपाही को फटकारते हुए बोला,
'इसे धक्के देकर बाहर करो,
और आगे से पूरे मुसलमान को लाया करो।'

(प्रथम प्रकाशन : अक्तूबर 1997)

वर्ष 35 अंक 11 मई 2026





आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

कान्ति
मासिक

इस अंक में

➤ आधा मुसलमान (विचार सौरभ)	– डॉ. कौसर यज़दानी नदवी	3
➤ नशे का अभिशाप (संपादकीय)	–डॉ. फ़रहत हुसैन	5
➤ मार्गदर्शन	–संपादन प्रभाग	6
➤ मक्का में विरोध का सामना	–मुशर्रफ़ अली	7
➤ सृष्टि से सृष्टिकर्ता तक	–आयशा सुल्ताना	11
➤ नशा : जीवन, समाज और आत्मा का दुश्मन	–डॉ. मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी	13
➤ स्वतंत्रता का भ्रम और मानवता का मौन विनाश	–एफ. ए. मुजीब	17
➤ नशे की लत	–मुहम्मद शकील शम्सी	19
➤ नशामुक्ति में जनसहयोग की ज़रूरत	–सुरेश सेठ	23
➤ नशा : पूर्ण निषेध ही एकमात्र समाधान	–सुफ़ियान अहमद	25
➤ युद्ध की मर्यादा : कब आवश्यक, कब अपराध ?	–सुफ़ियान अहमद	29
➤ ईरान-इस्राइल जंग : समस्या और समाधान	–इस्लाम हुसैन	31
➤ वार्षिक परीक्षा के बाद बचे समय में क्या करें?	–संपादन प्रभाग	33
➤ ग़ज़ल	–ज़हीर ललितपुरी	35
➤ दहेज का दंश	–संपादन प्रभाग	37
➤ उत्तराखंड में मुसलमान : भाग - 2	–इस्लाम हुसैन	39
➤ ग़रीबी दूर करने का मज़बूत ज़रिया	–सलमान अहमद	41
➤ धीरे उड़ता हुआ क्यों दिखाई देता है जहाज़ ?	–संपादन प्रभाग	45
➤ बुझता चिराग़	–संदीप कुमार सिंह	47

संपादकीय



डॉ. फ़रहत हुसैन

नशे का अभिशाप

सामाजिक बुराइयों में एक बड़ी बुराई शराब तथा मादक पदार्थों का सेवन है। विडंबना यह है कि एक ओर जहां समाज उन्नति की सीढियां चढ़ रहा है, तो वहीं दूसरी ओर विभिन्न बुराइयों के गर्त में भी गिरता जा रहा है। उसमें एक बड़ी बुराई शराब तथा नशे की लत है। नशे को बुराइयों की जननी भी कहा जाता है, क्योंकि नशा कई अन्य अपराधों के द्वार भी खोल देता है।

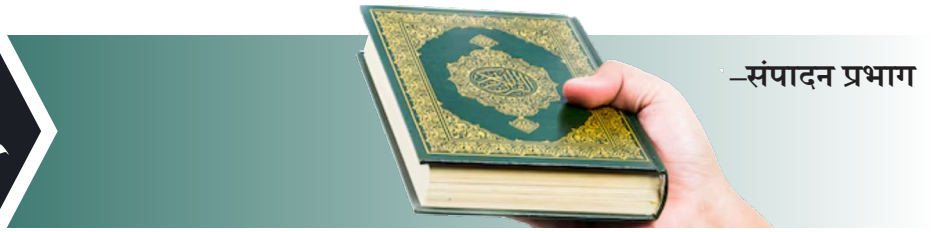
नशा क्यों बढ़ रहा है : समाज में नशा क्यों बढ़ रहा है इसके कई कारण हैं—पहला यह कि समाज इस बुराई के प्रति पूरी तरह गंभीर नहीं है, दूसरा यह कि व्यापारी वर्ग तथा सरकार शराब तथा मादक पदार्थों से आर्थिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं, तीसरा यह कि सामाजिक आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे लोग जब मानसिक अवसाद का शिकार होते हैं तो वह एक और अंधकार में क़दम रखते हैं यानी नशा करने लगते हैं, चौथा यह कि नशे की प्रवृत्ति को केवल शारीरिक हानि के रूप में देखा जाता है इसके नैतिक या आध्यात्मिक पक्ष पर ध्यान नहीं दिया जाता।

रोकथाम कैसे हो : नशे की रोकथाम के लिए केवल उपदेश देकर या सामाजिक बुराई बताकर काम नहीं चलेगा। इसके लिए वही मॉडल उचित है जो पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनाकर शराब से लतपत समाज को कुछ वर्षों में ही शराब मुक्त कर दिया था। उन्होंने शराब की लत को समाप्त करने के लिए क्रमिक (धीरे-धीरे) और मनोवैज्ञानिक तरीक़ा अपनाया था। उन्होंने क़ुरआन की शिक्षाओं के द्वारा लोगों में ईश्वर की आस्था और परलोक की जवाबदेही को बिठाया, फिर शराब के 'शैतानी काम' होने के क़ुरआन के आदेश को लोगों में पहुंचाया और उन्हें एहसास दिलाया कि इसके सेवन से ईश्वर नाराज़ होगा और परलोक में नरक की सज़ा मिलेगी। अपने अनेक संबोधनों के द्वारा शराब और नशे की ख़राबियों को बयान किया। शराब बनाने उसके क्रय-विक्रय तथा उससे जुड़ी समस्त गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया। शराब पीने वाले को दंडित करने का भी प्रावधान रखा गया। यही कारण था कि जब शराब को हराम (वर्जित) करने के आदेश की घोषणा मदीने में की गई तो लोगों ने तुरंत शराब को त्याग दिया और अपने पास रखी शराब को नालियों में बहा दिया। इस मॉडल में अस्ल अहमियत मानसिक चेतना और परलोक की जवाबदेही के एहसास की है।

नशा विरोधी अभियानों की नाकामी की वजह : नशा उन्मूलन अभियान बहुत सफल नहीं हुए उसका बड़ा कारण इस बुराई को एक साधारण सामाजिक बुराई तक सीमित रखना तथा उसकी व्यापकता तथा गंभीरता को नज़रअंदाज़ करना है। शराब के कारोबार से व्यापारी वर्ग तथा सरकार को आय प्राप्त होती है। 'शराब और नशा ज़हर है' यह कहने के बजाय कहा यह जाता है कि 'चोरी छुपे बिकने वाली शराब ज़हर है' और यह कि 'शराब पीकर गाड़ी न चलाओ'। कभी-कभी कुछ धार्मिक अनुष्ठानों में अथवा धर्म स्थलों पर नशे का सेवन नशे के प्रति घृणा को कम करने का कारण भी बनता है।

शराब और सभी नशीली चीज़ें स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक हैं, नैतिकता के विरुद्ध हैं तथा जघन्य अपराधों को जन्म देने वाली हैं। आर्थिक दृष्टि से हो सकता है किसी वर्ग को कुछ लाभ हो जाए या इन चीज़ों के सेवन से कोई व्यक्ति क्षणिक आनंद प्राप्त कर ले, परंतु कुल मिलाकर यह एक बड़ी बुराई है तथा समाज के लिए अत्यंत हानिकारक है, इसलिए इस बुराई को समाज से समूल समाप्त करने के लिए गंभीर प्रयासों की आवश्यकता है। ■■

क़ुरआन



–संपादन प्रभाग

शराब और जुआ शैतानी काम

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, यह शराब और जुआ और ये आस्ताने और पांसे, ये सब गन्दे शैतानी काम हैं, इनसे बचो, आशा है कि तुम्हें सफलता मिलेगी।" (क़ुरआन, सूरा-5, अल-माइदा : 90)

शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने से पहले क़ुरआन में दो आदेश आ चुके थे, जिनके द्वारा शराब तथा नशे की चीज़ों की बुराई लोगों के मन में बिठा दी गई थी और उन्हें मानसिक रूप से नशे पर रोक के लिए तैयार किया गया था। पहले कहा गया कि "शराब और जुए दोनों में बड़ी ख़राबी है और लोगों के लिए कुछ लाभ भी हैं मगर उनका नुक़सान उनके लाभ से बहुत अधिक है।" (क़ुरआन, 2:219)। कुछ समय बाद आदेश हुआ–"ईमान लाने वालो! नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ।" (क़ुरआन,4:43)। फिर उपर्युक्त आदेश द्वारा शराब की पूर्ण मनाही कर दी गई। इस आदेश की सार्वजनिक घोषणा होने के बाद मदीने की गलियों में लोगों ने शराब को बहा दिया। इस प्रकार इस बुराई को जड़ से समाप्त करने के लिए ईश्वर की नाराज़गी और परलोक की सज़ा को मन में बिठाया गया तथा साथ ही दंडसंहिता के द्वारा शराब पीने वालों तथा नशा करने वालों को दंडित करने का भी प्रावधान रखा गया। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने संबोधनों के द्वारा लोगों को नशे की सभी चीज़ों से दूर रहने के निर्देश दिए। शराब को दवा के रूप में प्रयोग की लोगों ने अनुमति चाही तो उन्होंने पूर्ण रूप से मना कर दिया और कहा कि, "यह दवा नहीं बल्कि बीमारी है।"

हदीस

शराब और अन्य नशीली चीज़ों के बारे में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के प्रमुख कथन इस प्रकार हैं-

1. "शराब तमाम बुराइयों की जड़ है और यह बेशर्मी की चीज़ों में सबसे बढ़कर है।"
(हदीस : इब्ने-माजा)

क्योंकि नशे की हालत में व्यक्ति हत्या, व्यभिचार और चोरी जैसे गंभीर अपराध आसानी से कर बैठता है।

2. "हर नशा लाने वाली चीज़ हराम (वर्जित) है।" (हदीस : सही मुस्लिम)
3. "हर वह चीज़ जो नशा पैदा करे, ख़म्र है, और हर ख़म्र हराम है।" (हदीस : सही मुस्लिम)
4. "हर वह चीज़ जिसकी बड़ी मात्रा नशा पैदा करने वाली हो उसकी अल्प-मात्रा भी हराम है।"
(हदीस : सुनन अबू-दाऊद)
5. "शराब के साथ जुड़े हुए दस लोगों पर अल्लाह की ओर से लानत और धिक्कार है। जो उसको निचोड़ता या तैयार करता है, जिसके लिए तैयार की गई है, उसका पीने वाला, उसको पहुंचाने या भेजने वाला, जिसके पास उसे भेजा जाए या पहुंचाया जाए, जिसे शराब पेश की जाए, उसे बेचने वाला, उसकी आमदनी से फ़ायदा उठाने वाला, उसे अपने लिए ख़रीदने वाला और दूसरे के लिए उसे ख़रीदने वाला।" (हदीस : इब्ने-माजा)

अर्थात् केवल उन्हीं लोगों पर लानत नहीं भेजी गई है जो शराब पीते हैं, बल्कि उन लोगों पर भी अल्लाह और उसके पैग़म्बर (सल्ल०) की ओर से लानत की गई है जो शराब या नशे की चीज़ों का कारोबार करते हैं और उसमें सहयोग करते हैं।

जीवन आदर्श

अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.)

मक्का में विरोध का सामना



❖मुशर्रफ़ अली

अपने उपास्यों की वास्तविकता सुनकर मक्का वाले ग़ुस्से से भर गये। वे यह बात सहन करने को तैयार नहीं थे कि कोई मूर्तिपूजकों को भटका हुआ कहे। न केवल कहे बल्कि तर्कों से साबित करे। चूंकि उनके समाज और उनकी अर्थव्यवस्था की आधारशिला ही मूर्तिपूजा पर थी, अतः वे बुरी तरह बौखला उठे। वे एकेश्वरवाद की पुकार के विरोध में उठ खड़े हुए। वे जानते थे कि सभी झूठे उपास्यों का इन्कार कर एक ईश्वर पर आस्था रखने और उसके भेजे हुए रसूल को मानने का मतलब है कि अपने-आपको पूरी तरह रसूल के हवाले कर दिया जाए और चुपचाप उसके आदेशों का पालन किया जाए। मक्का के मूर्तिपूजक जानते थे कि इसका परिणाम यह होगा कि उन्हें समस्त अरब पर जो वर्चस्व प्राप्त है, वह समाप्त हो जाएगा। अल्लाह और उसके रसूल के मुक़ाबले में उन्हें अपनी मर्ज़ी पर चलने का कोई अधिकार नहीं रह जाएगा। समाज के निचले वर्गों का उत्पीड़न करने की जो परम्परा उन्होंने बना रखी है, उसे उन्हें छोड़ना पड़ेगा।

क़ुरैश और मक्का के दूसरे क़बीलों वाले ये सब कुछ समझ तो रहे थे, लेकिन समस्या यह थी कि उनके सामने एक ऐसा व्यक्ति था, जो समाज का सबसे सच्चा और ईमानदार आदमी था, जो नैतिक मूल्यों के शिखर पर था, जिसमें उनमें से किसी ने कभी कोई बुराई नहीं देखी थी।

काफ़ी सोच विचार के बाद वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चचा अबू-तालिब के पास गये और उनसे कहा कि वे मुहम्मद को रोक लें। उन्होंने तर्क यह दिया कि वह हमारे उपास्यों को बुरा भला कहता है। वह कहता है कि ये झूठे उपास्य हैं, ये किसी को न लाभ पहुंचा सकते हैं न हानि। यह तो खुल्लम-खुल्ला हमारे उपास्यों का अपमान है। इसका अर्थ तो यह भी हुआ कि हमारे पूर्वज मूर्ख और भटके हुए थे। अतः आप या तो अपने भतीजे को रोक लें या हमारे और उसके बीच से हट जाएं। अबू-तालिब ने उनके साथ नर्मी से बातचीत की और वे चले गये। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के दीन को फैलाने के काम में लगे रहे।

इसी बीच हज का मौसम आ गया। क़ुरैश घबरा गये। उनकी चिन्ता का विषय यह था कि अब अरब के दूर-दराज़ इलाक़ों से लोग मक्का आएंगे और मुहम्मद को अपना दीन फैलाने का ज़्यादा अवसर मिल जाएगा। इसलिए उन्होंने यह फ़ैसला किया कि पहले ही लोगों को मुहम्मद के बारे में ऐसी बातें बता दी जाए कि कोई उनकी बात न सुने।

मक्का के बड़े लोगों की एक सभा बुलायी गयी, जिसमें लम्बे समय तक विचार-विमर्श होता रहा। जो सुझाव भी

आता वह किसी न किसी आधार पर रद्द कर दिया जाता। अन्त में लोगों ने सभा के अध्यक्ष से राय मांगी। अध्यक्ष ने कहा अल्लाह की क़सम उसकी बातें बहुत मीठी हैं और उसकी जड़ें बहुत गहरी हैं, हम उसके ख़िलाफ़ जो बात भी कहेंगे वह फीकी होगी। उसकी असत्यता जल्दी ही लोगों पर स्पष्ट हो जाएगी। लेकिन हम यह कह सकते हैं कि वह जादूगर है। उसकी बातों से पिता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी और कुनबे-क़बीले में फूट पड़ जाती है। यह तय हुआ कि मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में हर आदमी यही बात कहेगा।

योजना के अनुसार मक्का आने वाले सभी रास्तों पर लोग बैठ गये और हज के लिए आने वाले हरेक आदमी को विस्तार से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में बताने लगे। दूसरी ओर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी अपनी क्षमता भर लोगों से मिलते और उनके सामने अल्लाह का दीन पेश करते। विरोधियों के इस अभियान का नतीजा यह निकला कि पूरे अरब में यह बात फैल गयी कि मक्का में मुहम्मद नाम के एक आदमी ने अल्लाह का नबी होने का दावा किया है।

योजना के अनुसार मक्का आने वाले सभी रास्तों पर लोग बैठ गये और हज के लिए आने वाले हरेक आदमी को विस्तार से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में बताने लगे। दूसरी ओर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी अपनी क्षमता भर लोगों से मिलते और उनके सामने अल्लाह का दीन पेश करते। विरोधियों के इस अभियान का नतीजा यह निकला कि पूरे अरब में यह बात फैल गयी कि मक्का में मुहम्मद नाम के एक आदमी ने अल्लाह का नबी होने का दावा किया है।

जब मक्का वालों ने देखा कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दीन को फैलने से रोकने की रणनीति सफल नहीं हुई बल्कि उसका उल्टा असर हुआ तो उन्होंने एक बार फिर विचार-विमर्श किया। अब उन्होंने दूसरा तरीक़ा अपनाया। जब भी वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को या आपके साथियों को दीन की दावत देते देखते तो वहां पर जमा हो जाते। जब वे क़ुरआन की आयत पेश करते तो उनका मज़ाक़ उड़ाने लगते, कभी उनको पागल और दीवाना बताते, कभी उनपर गंभीर झूठे आरोप लगाते, कभी उन्हें जादूगर और झूठा बताते और तरह-तरह से आपको परेशान करते और इस्लाम-प्रचार के काम में रुकावट डालने की कोशिश करते।

इससे भी आगे बढ़कर वे क़ुरआन की आयतों का अर्थ बिगाड़ कर पेश करते, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं को भी बदल कर और उन्हें संदिग्ध बनाकर प्रचारित करते। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके साथियों के व्यक्तित्व पर अनर्गल टिप्पणियां करते। वे ये सब इतनी अधिकता से करते ताकि लोगों को आपकी शिक्षाओं पर विचार करने का मौक़ा ही न मिल सके।

इससे भी बात नहीं बनी तो उनमें से एक आदमी ईरान गया और वहां बादशाहों की रोचक घटनाएं और पहलवानों की कहानियां सीखीं और वापस आ गया। जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) किसी जगह बैठकर अल्लाह की बातें बताते और उन्हें अल्लाह की पकड़ से डराते, तो यह वहां जाकर अपनी कहानियां शुरू कर देता और कहता कि मैं तुम्हें मुहम्मद से अच्छी बातें बताता हूं। इतना ही नहीं मक्का के धनवानों ने कुछ नर्तकियां भी ख़रीद रखी थीं, जब उन्हें किसी के बारे में मालूम होता कि उसका रुझान हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दीन की ओर हो रहा है, तो वे एक नर्तकी को उसके ऊपर छोड़ देते, जो उसे खिलाती-पिलाती और नाच-गाने सुनाती और उसे इस्लाम से फेर देने की कोशिश करती।

इससे भी जब बात नहीं बनी तो मक्का के बहुदेववादियों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के साथ सौदेबाज़ी करने की कोशिश की। मक्का के कुछ गणमान्य व्यक्ति आपके पास आये और कहने लगे आओ हम दोनों आपस में समझौता कर लेते हैं। एक बार हम तुम्हारे उपास्य की पूजा करते हैं और अगली बार तुम हमारे उपास्यों की पूजा करो। इस तरह हम दोनों इस काम में समान हो जाएंगे। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उनके इस हास्यास्पद सुझाव को सिरे से नकार दिया, क्योंकि आप जिस दीन की दावत दे रहे थे उसमें उपास्य केवल एक अल्लाह है। 'अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं', यह इस्लाम का मौलिक सिद्धांत है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को जब यह आदेश मिला कि आप लोगों को बता दीजिए कि वे अपने स्रष्टा, पालनहार और स्वामी की बन्दगी करें, उसके आदेशों के अनुसार जीवन गुज़ारें और मनमानी करना छोड़ दें। आपको यह भी आदेश दिया गया कि लोगों को ईश्वरीय आदेशानुसार जीवन गुज़ारने के पुरस्कारों की शुभ सूचना दे दें और ईश्वरीय आदेशों की अवज्ञा के दुष्परिणामों से डराएं तो आप तनमन से इस काम में जुट गये। लेकिन मक्का के लोग आपकी बातें मानकर न देते थे, बल्कि उल्टा आपका मज़ाक़ उड़ाते थे, लेकिन आपने अपने प्रयासों में कोई कमी नहीं की।

इसी बीच क़ुरआन की कई ऐसी आयतें उतरीं जिनमें ईश्वर की अवज्ञा करने वालों को परलोक में मिलने वाली सज़ा का विवरण है। कई आयतों में विस्तार से बताया गया है कि इन्कारियों को अत्यंत दुखद और कभी न ख़त्म होने वाली यातनाएं दी जाएंगी। इन आयतों के आने के बाद आपके दिन का चैन और रातों की नींद ख़त्म हो गयी। मक्का के लोगों के रवैये से आप बहुत दुखी रहने लगे। आपको मानवजाति से इतनी हमदर्दी थी कि आप नहीं चाहते थे कि कोई भी मनुष्य परलोक की यातना का शिकार हो, लेकिन दूसरी ओर लोग थे कि मानने को तैयार नहीं थे। इसी संघर्ष में आपका स्वास्थ्य ख़राब हो गया। आप समय से पहले बूढ़े हो गये। यहां तक कि अल्लाह को कहना पड़ा :

जब आपने मक्का में लोगों को बताया कि उपास्य केवल एक है और वह अल्लाह है, तो किसी के लिए भी इसमें संदेह की गुंजाइश बाक़ी नहीं रही। दिल में एक अल्लाह के सिवा किसी के लिए भी भक्ति की लेशमात्र भवना भी नहीं बची। हज़रत बिलाल (रज़ि.) के गले में मूज की रस्सी बांध कर चिलचिलाती धूप में मक्का की पथरीली ज़मीन पर घसीटा गया, लेकिन वे अहद, अहद (एकमात्र उपास्य) ही कहते रहे।

"(ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा हाल तो यह है कि तुम इनके पीछे मारे दुख के अपनी जान ही न गंवा दो अगर ये इस शिक्षा पर ईमान नहीं लाए।" (क़ुरआन, 18:6)

"हालांकि तुम्हारा काम तो केवल समझाते रहना ही है, अतः तुम समझाते रहो। तुम उनपर दारोग़ा (नियुक्त) नहीं किये गये हो।

अलबत्ता जो व्यक्ति मुंह फेरेगा तो अल्लाह उसे बड़ी यातना देगा।

निस्संदेह हमारी ही ओर उनकी वापसी है फिर हमारे ही ज़िम्मे उनका हिसाब लेना है।" (क़ुरआन, 88: 21-26)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर क़ुरआन की आयतों की प्रकाशना जारी थी, यानी अल्लाह का फ़रिश्ता समय-समय पर अल्लाह के पास से आयतें लेकर आता और वे आयतें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को याद करा देता। इन आयतों में समस्त मानवजाति के लिए और रहती दुनिया तक के लिए मार्गदर्शन है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) इन्हीं आयतों के माध्यम से अपने साथियों (सहाबा) को शिक्षित और प्रशिक्षित करते और उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अल्लाह की मर्ज़ी से अवगत कराते। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह द्वारा चुने हुए नबी थे, उनके अन्दर अल्लाह ने वह क्षमता रखी थी कि आप अल्लाह की मर्ज़ी लागों के दिलों में उतार देते थे।

प्रशिक्षण तो क़ुरआन की आयतों द्वारा ही होता, लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उन आयतों की व्याख्या इतनी सुन्दर करते कि अल्लाह का दीन लोगों के दिलों में समा जाता। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का एक नाम अल्लाह ने शाहिद भी रखा है। शाहिद का अर्थ होता है गवाही देने वाला। गवाही कोई उसी चीज़ की दे सकता है, जिसका उसने स्वयं अनुभव किया हो। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर जब क़ुरआन के आदेश उतरते तो आपको ऐसा अनुभव होता, मानो सब कुछ आंखों के सामने हो रहा हो। क्योंकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह ने आकाश में बुलाकर स्वर्ग, नरक और कायनात के दूसरे बहुत से रहस्य दिखलाये भी थे। इसलिए जब आप क़ुरआन के आदेश बयान करते तो सुनने वालों को ऐसा लगता कि आप अपना अनुभव बता रहे हैं।

जब आपने मक्का में लोगों को बताया कि उपास्य केवल एक है और वह अल्लाह है, तो किसी के लिए भी इसमें संदेह की गुंजाइश बाक़ी नहीं रही। दिल में एक अल्लाह के सिवा किसी के लिए भी भक्ति की लेशमात्र भवना भी नहीं बची। हज़रत बिलाल (रज़ि.) के गले में मूज की रस्सी बांध कर चिलचिलाती धूप में मक्का की पथरीली ज़मीन पर घसीटा गया, लेकिन वे अहद, अहद (एकमात्र उपास्य) ही कहते रहे। इस्लाम स्वीकार करने वाले और भी कई लोगों ने अपनी जानें दे दीं, मगर अल्लाह के साथ किसी को साझी मानने को तैयार नहीं हुए। ■■



“दो आंखें
ऐसी हैं जिनको नरक की
आग नहीं छू सकती–
एक वह आंख जो ईश्वर के भय से रो
पड़ती हो और दूसरी वह आंख जिसने
ईश्वर के मार्ग में पहरा देते हुए रात
व्यतीत की हो।”

(हदीस : तिरमिज़ी)

A Well Wisher

Arshad Ahmad

Bengalore (K.S.)

सृष्टि से सृष्टिकर्ता तक

❖आयशा सुल्ताना

आज के समय के आधुनिक मनुष्य ने अपनी भागदौड़ की बदौलत बहुत कुछ पा लिया है, लेकिन उससे कहीं अधिक खो भी दिया है—विशेषकर वह क्षमता, जिसके द्वारा वह सृष्टि को महसूस कर सके, उसकी सुंदरता को समझ सके, और उसके पीछे छिपी हुई महान सत्ता को पहचान सके। जब हम अपनी चिंताओं और भागदौड़ से ऊपर उठकर ठहरते हैं और सच में देखना सीखते हैं, तब हमें एहसास होता है कि जीवन की असली सुंदरता हमारे चारों ओर ही बिखरी हुई है—उगते सूरज की रोशनी में, उड़ते पक्षी के कोलाहल में, हवा के कोमल स्पर्श में और प्रकृति की शांत लय में। यही वह क्षण है, जब हम शांत मन से ईश्वर की महानता को महसूस करते हैं।



उगते सूरज की पहली किरण, जो धरती को जीवन देती है; हवा का कोमल स्पर्श, जो बिना दिखे भी अपनी उपस्थिति का एहसास कराता है; पक्षियों की चहचहाहट, जो प्रकृति की जीवंतता का संगीत है—ये सब केवल दृश्य नहीं हैं, बल्कि संकेत हैं, संकेत उस शक्ति के, जिसने इस पूरी सृष्टि को संतुलन और सौंदर्य के साथ रचा है।

इसी लिए क़ुरआन कहता है–

"निस्संदेह आकाशों और धरती की रचना में, और रात और दिन के बदलने में, समझ रखने वालों के लिए निशानियां हैं।" (क़ुरआन, 3:190)

यह "निशानियां" केवल बाहरी सौंदर्य नहीं हैं, बल्कि वे गहरे अर्थ समेटे हुए हैं। जब मनुष्य ठहरकर इन निशानियों को देखता है, तब वह केवल प्रकृति का आनंद नहीं लेता, बल्कि वह अपने अस्तित्व के उद्देश्य को भी समझने लगता है।

आधुनिक जीवनशैली ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया है कि वह इन संकेतों को देखने की फ़ुरसत ही नहीं निकाल पाता। वह सूरज को केवल एक खगौलीय पिंड मानता है, हवा को केवल एक भौतिक तत्व और पक्षियों की आवाज़ को केवल शोर, लेकिन जब वही मनुष्य अपने भीतर शांति पैदा करता है और ध्यानपूर्वक इन सबको महसूस करता है, तब उसके लिए हर एक चीज़ एक संदेश बन जाती है—एक ऐसा संदेश, जो उसे अपने रचयिता की ओर ले जाता है।

प्रकृति मनुष्य को सोचने के लिए प्रेरित करती है कि इस व्यवस्था के पीछे कैसी पूर्णता और योजना काम कर रही है। यही वह बिंदु है, जहां से गहन चिंतन के परिणामस्वरूप आस्था की शुरुआत होती है।

आज की दुनिया में मानसिक तनाव, अवसाद और असंतोष का एक बड़ा कारण यह भी है कि मनुष्य ने अपने और प्रकृति के बीच के संबंध को कमज़ोर कर दिया है। उसने अपने चारों ओर कृत्रिम दुनिया खड़ी कर ली है, जिसमें शोर है, लेकिन संगीत नहीं; गति है, लेकिन संतुलन नहीं। ऐसे में जब वह कुछ क्षणों के लिए भी प्रकृति की ओर लौटता है, तो उसे एक अजीब-सी शांति का अनुभव होता है। यह शांति केवल बाहरी नहीं होती, बल्कि यह उसके भीतर तक उतर जाती है।

इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो प्रकृति केवल आनंद का स्रोत नहीं है, बल्कि यह एक माध्यम है—ईश्वर की महानता को समझने का माध्यम, अपने अस्तित्व को पहचानने का

माध्यम और जीवन के उद्देश्य को जानने का माध्यम। लेकिन यह अनुभव तभी संभव है, जब हम अपने भीतर ठहराव पैदा करें। ठहराव केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक भी होना चाहिए। जब मन शांत होता है, तभी वह देख पाता है; जब हृदय निर्मल होता है, तभी वह महसूस कर पाता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने जीवन में कुछ ऐसे क्षण निकालें, जब हम केवल "हो" सकें—न कि कुछ "कर" रहे हों। जब हम केवल प्रकृति को देखें, उसकी ध्वनियों को सुनें, और उसके स्पर्श को महसूस करें। यही वे क्षण होते हैं, जब हम अपने रचयिता के सबसे क़रीब होते हैं।

अंततः, यह समझ लेना चाहिए कि सृष्टि की सुंदरता कोई संयोग नहीं है, बल्कि यह एक सुसंगठित और उद्देश्यपूर्ण रचना है। जब हम इसे इस दृष्टि से देखते हैं, तो हमारा जीवन केवल जीने की प्रक्रिया नहीं रह जाता, बल्कि यह एक यात्रा बन जाता है—एक ऐसी यात्रा, जो हमें सृष्टि से होते हुए सृष्टिकर्ता तक ले जाती है।

और शायद यही जीवन का सबसे बड़ा सौंदर्य है कि हम इस विशाल जगत में रहकर भी उसके अर्थ को समझ सकें और उस महान सत्ता की पहचान कर सकें, जिसने हमें यह सब देखने, समझने और महसूस करने की क्षमता दी है।

अगर आपकी आंखें चिंताओं से भर गई हैं, तो आप डूबते सूरज की ख़ूबसूरती नहीं देख सकते। हममें से ज़्यादातर लोगों का प्रकृति से नाता टूट गया है। सभ्यता तेज़ी से बड़े शहरों की ओर बढ़ रही है और हम शहरी बनते जा रहे हैं,



भीड़-भाड़ वाले अपार्टमेंट में रहते हैं, शाम-सुबह आसमान देखने के लिए भी हमारे पास बहुत कम जगह होती है, और इसलिए हम कई तरह की ख़ूबसूरती से दूर होते जा रहे हैं। यह ग़ौर करने वाली बात है कि हममें से कितने लोग उगते या डूबते सूरज, चांद या पानी पर रोशनी के अक्स को देखते हैं।

प्रकृति से नाता टूटने के कारण, हम स्वाभाविक रूप से अपनी बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करने लगते हैं। हम बहुत सारे म्यूज़ियम और कॉन्सर्ट में जाते हैं, टेलीविज़न देखते हैं और मनोरंजन के कई दूसरे साधन अपनाते हैं। हम बार-बार दूसरों के विचारों का हवाला देते हैं और कला के बारे में बहुत सोचते व बातें करते हैं। ऐसा क्यों है कि हम कला पर इतना ज़्यादा निर्भर रहते हैं? क्या यह भागने का, या ख़ुद को जगाने का कोई तरीक़ा है? अगर आप सीधे तौर पर प्रकृति के संपर्क में हैं; अगर आप उड़ते हुए किसी पक्षी की उड़ान को देखते हैं, आसमान की हर हरकत में ख़ूबसूरती देखते हैं, पहाड़ों पर पड़ती परछाइयों या किसी दूसरे इन्सान के चेहरे की ख़ूबसूरती को देखते हैं, तो क्या आपको लगता है कि आप किसी तस्वीर को देखने के लिए किसी म्यूज़ियम में जाना चाहेंगे?

शायद ऐसा इसलिए है, क्योंकि आपको अपने आसपास की चीज़ों को देखना ही नहीं आता, और शायद इसीलिए आप ख़ुद को बेहतर ढंग से देखने के लिए किसी नशीली चीज़ का सहारा लेते हैं। महान लोगों ने प्रकृति के साथ समय बिताया है, और हम दिन-ब-दिन दूर हो रहे हैं। हम भले ही ज्ञान के पुस्तकालयों में समय बिताएं, पर जीवन की असली सुंदरता हमारे हाथों से फ़िसल रही होती है। प्रकृति की हर चीज़ में, एक गहन रहस्य और आनंद छिपा होता है, जिसे केवल महसूस किया जा सकता है। किसी नदी के बहाव में, किसी पेड़ की पत्तियों की हरकत में, हवाओं के संगीत में, हमें जीवन की अनकही सच्चाई मिलती है। और जब हम सचमुच देखना सीखते हैं, तभी हम अपनी अंतरात्मा की गहराइयों से जुड़ते हैं। यह ध्यान और सजगता का कार्य है—यह केवल आंखों से देखना नहीं, बल्कि मन की गहराइयों से अनुभव करना है।

आज के व्यस्त जीवन में, अगर हम थोड़ी देर रुकें, अपने विचारों और योजनाओं से मुक्त होकर, ध्यान से आसपास की चीज़ों को देखें, तो हमें आभास होगा कि ईश्वर की सत्ता कितनी महान, समृद्ध और सुंदर है। ■■

विशेष आयोजन

नशा : जीवन, समाज और आत्मा का दुश्मन

❖डॉ. मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी

कल तक वह अपने कॉलेज का टॉपर था—माता-पिता की आंखों का तारा, शिक्षकों की उम्मीद और साथियों के लिए प्रेरणा। आज वही युवक नशे की गिरफ़्त में है; आंखों में शून्यता, मन में बेचैनी और जीवन में बिखराव। एक क्षणिक "आनंद" की चाह ने उसके पूरे भविष्य को अंधकार में धकेल दिया। यह केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि हमारे समाज की एक व्यापक और चिंताजनक सच्चाई है।

नशा : एक महामारी

नशा आज एक वैश्विक महामारी का रूप ले चुका है। हालांकि कुछ देशों में शराब का सेवन न केवल सामान्य है, बल्कि वहां के कल्चर का अभिन्न हिस्सा है, लेकिन वहां भी मादक पदार्थ चिंता का कारण बनते जा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर वर्ष लाखों लोग मादक पदार्थों के सेवन से जुड़ी बीमारियों के कारण असमय मृत्यु का शिकार होते हैं। भारत में स्थिति और अधिक गंभीर है, जहां युवा वर्ग विशेष रूप से इसकी चपेट में आ रहा है। परिवार टूट रहे हैं, प्रतिभाएं नष्ट हो रही हैं और समाज की नैतिक संरचना कमज़ोर होती जा रही है।

इस्लाम ने इस ख़तरे को बहुत पहले पहचान लिया था। क़ुरआन स्पष्ट रूप से चेतावनी देता है–

"ऐ ईमान वालो! शराब, जुआ…शैतान के गंदे काम हैं; इनसे बचो ताकि तुम सफल हो सको।" (क़ुरआन, 5:90)

और हदीस में स्पष्ट कहा गया : "हर नशीला पदार्थ ख़म्र है और हर ख़म्र हराम है।" (सही मुस्लिम : 2003)

आइए नशे के स्वरूप, उसके प्रभावों और उससे मुक्ति के मार्ग को एक समग्र दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करें।

नशा : 'बस एक बार' और सब ख़त्म

नशा केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी सोच, अपने निर्णय और अपने व्यवहार पर नियंत्रण खो बैठता है। यह शारीरिक और मानसिक निर्भरता का ऐसा रूप है, जिसमें व्यक्ति चाहकर भी स्वयं को रोक नहीं पाता।

इसकी शुरुआत अक्सर एक साधारण प्रयोग से होती है—"बस एक बार"—किन्तु यही एक बार धीरे-धीरे आवश्यकता, फिर आदत और अंततः लत में बदल जाता है। मस्तिष्क में रासायनिक परिवर्तन इस अनुभव को बार-बार दोहराने के लिए प्रेरित करते हैं, और व्यक्ति एक अदृश्य बंधन में जकड़ जाता है।

इस्लाम ने इसे "ख़म्र" कहा—अर्थात् वह जो बुद्धि को ढंक दे। इस दृष्टि से हर वह चीज़ जो विवेक, नियंत्रण और इबादत (ईश-वंदना) की क्षमता को प्रभावित करे, नशे की श्रेणी में आती है।

नशे की बढ़ती प्रवृत्ति : तथाकथित आधुनिकता का उपहार

आज का समाज तीव्र प्रतिस्पर्धा, मानसिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ तले दबा हुआ है। युवाओं पर पढ़ाई, करियर और सामाजिक स्वीकृति का निरंतर दबाव बना रहता है, जिसके बीच नशा उन्हें एक "आसान रास्ता" प्रतीत होता है—तनाव से क्षणिक मुक्ति का साधन, या फिर तथाकथित आधुनिकता में "कूल" दिखने का माध्यम।

हालांकि, यह समझना भी आवश्यक है कि नशे की प्रवृत्ति केवल आधुनिक जीवन की उपज नहीं है; भारत के कुछ समुदायों में इसके कुछ रूप परंपरागत रीति-रिवाजों से भी जुड़े रहे हैं। उदाहरणार्थ, राजस्थान और उत्तर भारत के कुछ राजपूत तथा जाट समाजों में विवाह अथवा विशेष अवसरों पर अफ़ीम (अमल) का सेवन एक सामाजिक परंपरा के रूप में देखा गया है। इसी प्रकार, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के कुछ आदिवासी समुदाय—जैसे गोंड और भील—में महुआ से बनी शराब पारंपरिक पर्वों और सामुदायिक आयोजनों का अभिन्न हिस्सा रही है। पंजाब के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में भी भांग या देसी शराब का प्रयोग ऐतिहासिक रूप से मेलों और उत्सवों से जुड़ा रहा है।

किन्तु आधुनिक समय में यह प्रवृत्ति केवल परंपराओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने एक व्यापक और चिंताजनक रूप धारण कर लिया है। सोशल मीडिया, फ़िल्मी

संस्कृति और शहरी जीवनशैली ने इसे आकर्षक और सामान्य बनाने का कार्य किया है। पार्टियां, क्लब संस्कृति और साथियों का दबाव युवाओं को धीरे-धीरे इस दिशा में खींचता है, जबकि नशीले पदार्थों की आसान उपलब्धता—यहां तक कि ऑनलाइन माध्यमों के ज़रिए—इस समस्या को और अधिक गहरा कर देती है।

पंजाब में नशे की समस्या हाल के वर्षों में एक गंभीर सामाजिक, आर्थिक और क़ानून-व्यवस्था के संकट के रूप में उभरी है, जहां युवाओं का बड़ा वर्ग इसकी चपेट में आ चुका है। बेरोज़गारी, तस्करी नेटवर्क और सीमावर्ती स्थिति ने इस समस्या को और जटिल बना दिया है। इसी पृष्ठभूमि पर आधारित फ़िल्म "उड़ता पंजाब" ने इस हक़ीक़त को प्रभावशाली ढंग से उजागर करते हुए पूरे देश का ध्यान इस संकट की ओर आकर्षित किया।

क़ुरआन इस समूचे परिदृश्य का गहरा और सटीक विश्लेषण प्रस्तुत करता है : "शैतान चाहता है कि नशे और जुए के माध्यम से तुम्हारे बीच दुश्मनी और नफ़रत पैदा करे और तुम्हें अल्लाह की याद से रोक दे।" (क़ुरआन, 5:91)

यह केवल एक धार्मिक चेतावनी नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक यथार्थ का जीवंत चित्रण है—जहां नशा धीरे-धीरे व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों को अपनी गिरफ़्त में लेता जा रहा है।

नशे के प्रकार : बदलते रूप, बढ़ता ख़तरा

नशे के स्वरूप समय के साथ बदलते रहे हैं, किन्तु उनका प्रभाव सदैव विनाशकारी रहा है।

पारंपरिक नशों में शराब सबसे प्रमुख है, जो व्यक्ति की निर्णय क्षमता को समाप्त कर देती है और नैतिक पतन की ओर ले जाती है। तंबाकू और सिगरेट धीरे-धीरे शरीर को नष्ट करते हैं—फेफड़ों के कैंसर, हृदय रोग और अनेक गंभीर बीमारियों का कारण बनते हैं। गांजा, कोकीन और अन्य ड्रग्स मस्तिष्क को सीधे प्रभावित करते हैं, जिससे व्यक्ति वास्तविकता से कट जाता है।

आधुनिक युग में सिंथेटिक ड्रग्स जैसे MDMA और LSD अत्यंत ख़तरनाक रूप में सामने आए हैं, जिनका प्रभाव तीव्र और अप्रत्याशित होता है। इसके साथ ही एक नया रूप "डिजिटल नशा" भी वैश्विक समस्या के रूप में तेज़ी से उभर रहा है। यह मानसिक संतुलन को रासायनिक नशों की तरह ही प्रभावित करता है।

इसके अतिरिक्त, आज "प्रिस्क्रिप्शन ड्रग्स" का दुरुपयोग भी एक गंभीर समस्या बन चुका है—नींद की गोलियां, ट्रैंक्विलाइज़र और दर्द निवारक दवाएं, जिन्हें चिकित्सकीय सलाह के बिना लिया जाता है, धीरे-धीरे लत का रूप ले लेती हैं। यह एक ऐसा नशा है जो वैधता के आवरण में छिपा होता है, परन्तु प्रभाव बहुत घातक होता है।

इस प्रकार नशा केवल पदार्थों तक सीमित नहीं, बल्कि व्यवहारों और जीवनशैली तक भी घुसपैठ कर चुका है।

शारीरिक प्रभाव

नशा शरीर के प्रत्येक अंग पर गहरा प्रभाव डालता है।

हृदय पर इसका प्रभाव रक्तचाप में वृद्धि, अनियमित धड़कन और हृदयाघात के रूप में दिखाई देता है। मस्तिष्क पर इसका प्रभाव और भी गंभीर है—स्मृति ह्रास, निर्णय क्षमता में कमी और स्थायी न्यूरोनल क्षति।

धूम्रपान और अन्य नशे फेफड़ों को क्षतिग्रस्त करते हैं, जिससे कैंसर और सांस की गंभीर बीमारियां उत्पन्न होती हैं। शराब का प्रभाव यकृत पर पड़ता है, जिससे फैटी लीवर, हेपेटाइटिस और अंततः सिरोसिस जैसी स्थितियां उत्पन्न होती हैं।

इसके अतिरिक्त, नशा शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमज़ोर करता है, जिससे व्यक्ति संक्रमणों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है। कई मामलों में यह हार्मोनल असंतुलन, प्रजनन क्षमता में कमी और समय से पहले बुढ़ापे का कारण भी बनता है।

मोबाइल, कंप्यूटर आदि की स्क्रीन की नीली रोशनी (blue light) नींद और दिमाग़ की सर्कैडियन रिदम (Circadian Rhythm) को प्रभावित करती है, जिससे थकान, आंखों पर असर और नींद की गुणवत्ता प्रभावित होती है। उत्तेजनात्मक दृश्य सामग्री, सोशल मीडिया, गेमिंग और अश्लील सामग्री की लत मस्तिष्क में डोपामाइन के असंतुलन को बढ़ाती है, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक संतुलन उसी प्रकार प्रभावित होता है, जैसा रासायनिक नशों के सेवन से होता है।

क़ुरआन का आदेश स्पष्ट है : "अपने आपको क़त्ल (नष्ट) न करो।" (क़ुरआन, 4:29)

यह केवल आत्महत्या के संदर्भ में नहीं, बल्कि हर उस व्यवहार पर लागू होता है जो व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाता है।

मानसिक और सामाजिक प्रभाव

नशा मनुष्य के मानसिक और भावनात्मक संतुलन को गहराई से प्रभावित करता है।

यह प्रारंभ में कृत्रिम आनंद देता है, किन्तु धीरे-धीरे गहरे अवसाद, चिंता और निराशा का कारण बनता है। व्यक्ति की भावनाएं असंतुलित हो जाती हैं—छोटी-छोटी बातों पर ग़ुस्सा, आक्रामकता और असहिष्णुता बढ़ जाती है। निर्णय क्षमता कमज़ोर होने से व्यक्ति ग़लत क़दम उठाता है, जो उसके जीवन और समाज दोनों को प्रभावित करते हैं। परिवार और रिश्तों में दूरी बढ़ती है; विश्वास टूटता है और व्यक्ति धीरे-धीरे सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ जाता है।

इसके साथ ही नशा व्यक्ति के नैतिक ढांचे को भी कमज़ोर करता है—झूठ, छल, आर्थिक अनियमितता और अपराध की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। युवा अवस्था में यह प्रभाव और अधिक विनाशकारी होता है, क्योंकि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व-निर्माण को ही विकृत कर देता है। अधिकांश मामलों में यह स्थिति आत्मघाती विचारों तक पहुंच जाती है। इस प्रकार नशा केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज का संकट बन जाता है।

सरकार की भूमिका, ज़मीनी सच्चाई और राजनीति

नशे के बढ़ते संकट के इस दौर में सरकार की भूमिका केवल नीतियां बनाने तक सीमित नहीं रह सकती; उसे एक समन्वित, संवेदनशील और प्रभावी हस्तक्षेप सुनिश्चित करना होगा। शिक्षा, स्वास्थ्य और क़ानून—तीनों स्तरों पर एक सुदृढ़ और दूरदर्शी रणनीति अनिवार्य है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में नशामुक्ति शिक्षा को संस्थागत रूप दिया जाए, व्यापक और सतत जन-जागरूकता अभियान चलाए जाएं तथा डि-एडिक्शन केन्द्रों और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और किफ़ायती बनाया जाए। इसके साथ ही, नशीले पदार्थों की आपूर्ति-श्रृंखला पर कठोर नियंत्रण और तस्करी के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई आवश्यक है।

किन्तु धरातलीय वास्तविकता इन आदर्शों से भिन्न दिखाई देती है। नशामुक्ति सेवाएं अनेक स्थानों पर अपर्याप्त हैं, योजनाएं काग़ज़ों तक सीमित रह जाती हैं और क़ानून का क्रियान्वयन शिथिल पड़ जाता है, जिससे अवैध कारोबार निर्बाध चलता रहता है। विडंबना यह है कि अधिकांश राज्य राजस्व के लिए पर स्वयं शराब के व्यापार को बढ़ावा देते हैं, जिससे नीति और नैतिकता के बीच स्पष्ट विरोधाभास उभरता है।

राजनीतिक स्तर पर भी यह विषय अक्सर सतही विमर्श और आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित रह जाता है। समय की मांग है कि इसे एक गहरे नैतिक और सामाजिक संकट के रूप में स्वीकार किया जाए। पूर्ण नशाबंदी की मांग भी इसी संदर्भ में एक गंभीर विमर्श के रूप में उभरती है, जिसे व्यावहारिक चुनौतियों सहित राष्ट्रीय स्तर पर ईमानदारी से लागू किया जाना चाहिए। जब तक राजनीति, नीति और प्रशासन के बीच वांछित समन्वय स्थापित नहीं होगा, नशामुक्ति का लक्ष्य अधूरा ही रहेगा।

एक नई शुरुआत

नशा कोई साधारण बुराई नहीं, बल्कि एक ऐसा बारीक और ख़तरनाक जाल है जो धीरे-धीरे इंसान की पहचान, उसकी आत्मा और उसके भविष्य को निगल जाता है। यह क्षणिक आनंद का भ्रम तो देता है, किन्तु बदले में जीवन की वास्तविक ख़ुशियां, रिश्तों की गरमाहट और आत्म-सम्मान की रोशनी छीन लेता है। परन्तु इस अंधकार के बीच एक रोशनी सदैव बाक़ी रहती है, आशा का द्वार कभी बंद नहीं होता। हर गिरावट के बाद उठने का अवसर है, हर भटकाव के बाद लौट आने की राह है।

नशामुक्ति एक यात्रा है—संघर्षपूर्ण, किन्तु संभावनाओं से भरी। इस राह में ठोकरें भी आएंगी, लेकिन जो व्यक्ति ईमान की रोशनी, ज्ञान की स्पष्टता और अपने संकल्प की दृढ़ता के साथ आगे बढ़ता है, वह अवश्य सफल होता है। वह अपने बिखरे हुए जीवन को समेट सकता है, अपने टूटे हुए रिश्तों को जोड़ सकता है और अपने अस्तित्व को पुनः अर्थपूर्ण बना सकता है।

आज आवश्यकता केवल एक निर्णय की है—हम अपने जीवन को नशे के हवाले क्यों करें? क्यों न हम उसे उद्देश्य, अनुशासन और आध्यात्मिकता की रोशनी में ढालें?

याद रखिए—नशा आपको कुछ नहीं देता, बल्कि वह आपसे सब कुछ छीन लेता है। इसके विपरीत, विश्वास, संयम और आत्म-नियंत्रण ही वे आधार हैं जो जीवन को सफल और संतुलित बनाते हैं।

इसलिए आज ही एक अटल संकल्प कीजिए—न केवल स्वयं नशे से दूर रहने का, बल्कि अपने परिवार, अपने समाज और आने वाली पीढ़ियों को भी इससे बचाने का। याद रहे—नशे की लत और उसकी पकड़ शक्तिशाली होती है, लेकिन इंसान उससे कहीं अधिक शक्तिशाली है; वह अपने ईमान, संकल्प और दुआ की मदद से इस पकड़ से निकल सकता है और अपनी तक़दीर बदल सकता है। ■■

"समस्त मनुष्य
ईश्वर का कुटुम्ब (कुंबा) है,
अतः समस्त लोगों में ईश्वर
की दृष्टि में सबसे प्रिय व्यक्ति
वह है जिसका व्यवहार
ईश्वर के कुटुम्ब के
साथ अच्छा है।"

(हदीस : बैहक़ी)

A Well Wisher

Ansar Ahmad Siddique

Satna (M.P)

स्वतंत्रता का भ्रम और मानवता का मौन विनाश

❖एफ. ए. मुजीब



आधुनिक मानव अपने-आपको पहले से अधिक जागरूक, वैज्ञानिक और स्वतंत्र मानता है। वह तकनीकी प्रगति, ज्ञान-विस्तार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि समझता है। लेकिन इसी तथाकथित प्रगति के बीच एक ऐसा संकट भी लगातार गहराता जा रहा है, जो मानव की सबसे बड़ी शक्ति—उसकी बुद्धि और चेतना—को ही नष्ट कर रहा है। यह संकट है नशे का। नशा केवल एक व्यक्तिगत आदत नहीं, बल्कि एक वैश्विक समस्या है, जो मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है—चाहे वह स्वास्थ्य हो, समाज हो, अर्थव्यवस्था हो या नैतिकता।

विज्ञान ने अब इस तथ्य को पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है कि नशा मानव मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को सीधे प्रभावित करता है। मस्तिष्क का वह भाग, जो निर्णय लेने, आत्म-नियंत्रण और सही-ग़लत में अंतर करने की क्षमता देता है, नशे के प्रभाव में कमज़ोर पड़ जाता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति क्षणिक आनंद के पीछे दीर्घकालिक हानि को नज़रअंदाज़ करने लगता है। यही कारण है कि नशा धीरे-धीरे एक लत का रूप ले लेता है और व्यक्ति अपनी ही इच्छाशक्ति पर नियंत्रण खो देता है। इस स्थिति में वह स्वतंत्र नहीं रहता, बल्कि एक अदृश्य बंधन में जकड़ जाता है।

मस्तिष्क का वह भाग, जो निर्णय लेने, आत्म-नियंत्रण और सही-ग़लत में अंतर करने की क्षमता देता है, नशे के प्रभाव में कमज़ोर पड़ जाता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति क्षणिक आनंद के पीछे दीर्घकालिक हानि को नज़रअंदाज़ करने लगता है।

चिकित्सीय दृष्टि से भी नशे के दुष्परिणाम अत्यंत गंभीर हैं। विश्व स्तर पर हर वर्ष लगभग 30 लाख लोग नशे के कारण मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि लाखों टूटते परिवारों, बिखरते जीवनों और अधूरी कहानियों की सच्चाई है। इसके अतिरिक्त, नशा अनेक गंभीर बीमारियों का प्रमुख कारण है—जैसे यकृत (लिवर) की बीमारी, हृदय रोग, मानसिक विकार, अवसाद और कैंसर। नशा शरीर को धीरे-धीरे भीतर से समाप्त करता है, और व्यक्ति को यह एहसास भी नहीं होने देता कि वह किस दिशा में जा रहा है।

सड़क दुर्घटनाओं और हिंसात्मक घटनाओं में भी नशे की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हर वर्ष लाखों लोग केवल इसलिए अपनी जान गंवा देते हैं क्योंकि किसी ने नशे की अवस्था में वाहन चलाया या नियंत्रण खो दिया। इस प्रकार नशा केवल स्वयं के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के अन्य निर्दोष लोगों के लिए भी ख़तरा बन जाता है। यह एक ऐसा अपराध है, जिसमें पीड़ित और दोषी दोनों कभी-कभी एक ही व्यक्ति होता है।

नशे के गंभीर शारीरिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिणामों को देखते हुए विश्व भर की सरकारों ने नशे के विरुद्ध कठोर क़ानून बनाए हैं। लगभग हर देश में शराब और नशीले पदार्थों के सेवन, व्यापार और तस्करी पर

नियंत्रण के लिए नियम लागू हैं। नशे की अवस्था में वाहन चलाना एक गंभीर अपराध माना जाता है, और इसके लिए कड़ी सज़ा दी जाती है। मादक पदार्थों की तस्करी पर तो कई देशों में अत्यंत कठोर दंड का प्रावधान है। इसके साथ ही, नशा मुक्ति केंद्रों की स्थापना की जाती है, जहां लोगों को इस बुरी आदत से बाहर निकालने का प्रयास किया जाता है।

केवल सरकारें ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं, सामाजिक संगठन और जागरूक नागरिक भी नशे के विरुद्ध लगातार अभियान चला रहे हैं। विद्यालयों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, मीडिया के माध्यम से लोगों को इसके दुष्परिणामों से अवगत कराया जाता है, और समाज में इसे एक बुरी आदत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। "Say No to Drugs" जैसे अभियान इस बात का प्रमाण हैं कि पूरी दुनिया इस समस्या को गंभीरता से ले रही है और इसके समाधान के लिए प्रयासरत है।

यहां एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है : जब विज्ञान, समाज और क़ानून—तीनों नशे को हानिकारक मानते हैं, तो फिर भी यह समस्या समाप्त क्यों नहीं होती? इसका उत्तर मानव की मानसिकता में छिपा है। मनुष्य अक्सर तनाव, चिंता, अकेलेपन या अस्थायी सुख की खोज में नशे का सहारा लेता है। लेकिन यह एक भ्रम है। नशा न तो समस्याओं का समाधान करता है, और न ही स्थायी सुख देता है। इसके विपरीत, यह समस्याओं को और अधिक जटिल बना देता है।

यही वह बिंदु है जहां हमें ईश्वर के उस सार्वभौमिक संदेश की ओर ध्यान देना चाहिए, जो हर युग और हर समाज के लिए समान रूप से लागू होता है। यह संदेश हमें अपनी बुद्धि, स्वास्थ्य और नैतिकता की रक्षा करने की शिक्षा देता है। नशा इन तीनों को नष्ट करता है, इसलिए इससे दूर रहने की स्पष्ट हिदायत दी गई है। यह कोई संकीर्ण धार्मिक आदेश नहीं, बल्कि मानव कल्याण का एक सार्वभौमिक सिद्धांत है।

यदि हम विभिन्न समाजों का तुलनात्मक अध्ययन करें, तो यह स्पष्ट होता है कि जहां नशे को सामाजिक और नैतिक रूप से अस्वीकार्य माना जाता है, वहां इसके दुष्परिणाम अपेक्षाकृत कम होते हैं। विशेष रूप से उन समाजों में, जहां धार्मिक मूल्यों का प्रभाव अधिक है, वहां नशे की प्रवृत्ति कम पाई जाती है। इसके विपरीत, जहां इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर स्वीकार कर लिया गया है, वहां इसके दुष्परिणाम अधिक व्यापक रूप में सामने आते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं कि कोई समाज पूरी तरह इस समस्या से मुक्त है, बल्कि यह कि सिद्धांतों का पालन जितना अधिक होगा, समस्या उतनी ही नियंत्रित रहेगी। यह एक स्पष्ट संकेत है कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का मानव जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है।

अंततः यह कहना ग़लत नहीं होगा कि नशा एक ऐसा जाल है, जिसमें फंसने के बाद निकलना अत्यंत कठिन हो जाता है। इसलिए सबसे अच्छा उपाय यही है कि इससे दूर ही रहा जाए। यह निर्णय केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक ज़िम्मेदारी भी है।

जब एक व्यक्ति नशे से दूर रहने का निर्णय लेता है, तो वह केवल अपने जीवन को सुरक्षित नहीं करता, बल्कि अपने परिवार, समाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह एक ऐसा निर्णय है, जो न केवल वर्तमान को सुधारता है, बल्कि भविष्य को भी सुरक्षित बनाता है।

वास्तविक स्वतंत्रता इसी में है कि मनुष्य अपनी बुद्धि का सही उपयोग करे, अपने जीवन का मूल्य समझे और नशे के इस भ्रमजाल से स्वयं को बचाए। क्योंकि नशा छोड़ना केवल एक आदत को त्यागना नहीं, बल्कि अपनी असली पहचान—अपनी मानवता—को बचाना है।

अंत में, सत्य बिल्कुल स्पष्ट है—विज्ञान कहता है कि नशा हानिकारक है, समाज इसे एक बुराई मानता है, क़ानून इसे अपराध घोषित करता है, और ईश्वर का सार्वभौमिक संदेश हमें इससे दूर रहने की शिक्षा देता है।

जब चारों दिशाओं से एक ही आवाज़ उठे, तो उसे अनदेखा करना बुद्धिमानी नहीं, बल्कि आत्म-विनाश की ओर बढ़ना है। इसलिए वास्तविक स्वतंत्रता इसी में है कि मनुष्य अपनी बुद्धि का सही उपयोग करे, अपने जीवन का मूल्य समझे और नशे के इस भ्रमजाल से स्वयं को बचाए। क्योंकि नशा छोड़ना केवल एक आदत को त्यागना नहीं, बल्कि अपनी असली पहचान—अपनी मानवता—को बचाना है। ■■

विशेष आयोजन

एक ऐसी जेल है जिसके ताले अंदर की ओर लगे हैं

नशे की लत



❖मुहम्मद शकील शम्सी

ड्रग की लत कैसे लगती है, इस पर संक्षिप्त और प्रभावशाली टिप्पणी करते हुए अमेरिकी विद्वान और साहित्यकार एफ. स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड (1896–1940) ने कहा है—"पहले तुम शराब को पीते हो, फिर शराब ख़ुद को पीती है, और फिर वही शराब तुम्हें पी जाती है।"

दरअसल, नशीले पदार्थ ऐसे तत्व होते हैं जो मानसिक और शारीरिक कार्यों को बदल देते हैं। इनमें आम तौर पर शराब, निकोटिन, कैनाबिस, मारिजुआना, हेरोइन और अन्य अवैध ड्रग्स शामिल होते हैं। ये पदार्थ केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (सेंट्रल नर्वस सिस्टम) को प्रभावित करते हैं और ख़तरनाक स्तर तक ड्रग के उपयोग तथा गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनते हैं।

लत की शुरुआत अक्सर सामाजिक परिस्थितियों में मनोरंजन के लिए ड्रग को आज़माने से होती है और धीरे-धीरे इसका उपयोग बढ़ता जाता है। समय के साथ व्यक्ति को नशा पाने के लिए ड्रग की अधिक मात्रा की आवश्यकता पड़ने लगती है। जल्द ही ऐसा समय आ जाता है कि अच्छा महसूस करने के लिए भी ड्रग लेना ज़रूरी हो जाता है। जैसे-जैसे ड्रग का उपयोग बढ़ता है, बिना ड्रग के रहना कठिन होता जाता है। ड्रग छोड़ने की कोशिश करने पर तीव्र चाह (तलब) पैदा होती है और व्यक्ति शारीरिक रूप से बीमार महसूस करने लगता है। इन्हें "विदड्रॉल लक्षण" कहा जाता है।

कुछ ड्रग्स, जैसे ओपिओइड्स, अधिक ख़तरनाक होते हैं और इनकी लत दूसरों की तुलना में जल्दी लगती है। इस प्रकार व्यक्ति अपने ही बनाए हुए जाल में फंस जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है–"लत एक ऐसी जेल है जिसके ताले अंदर की ओर लगे होते हैं।"

ड्रग की लत एक ऐसी बुराई है जो व्यक्ति, उसके परिवार और पूरे समाज को धीरे-धीरे खोखला कर देती है। यह ख़ासकर नई पीढ़ी को अपने जाल में फंसाकर उसे बर्बाद कर देती है। किसी भी सभ्य समाज के लिए आवश्यक है कि इस बुराई से जितनी जल्दी हो सके छुटकारा पाया जाए।

ड्रग्स बहुत गंभीर नैतिक और सामाजिक समस्याएं पैदा करते हैं। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ ड्रग एब्यूज़ (NIDA) ने ड्रग की लत के कुछ प्रमुख नैतिक और सामाजिक प्रभावों की सूची तैयार की है :

1. नैतिक और आचार संबंधी प्रभाव

• **ज़िम्मेदारी बनाम मजबूरी :** एक बड़ा नैतिक सवाल यह है कि क्या नशे के आदी व्यक्ति अपने कामों के लिए ज़िम्मेदार होते हैं या नहीं। अक्सर उन्हें "नैतिक रूप से कमज़ोर" माना जाता है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि नशा

दिमाग़ के काम करने के तरीक़े (न्यूरोबायोलॉजी) को बदल देता है, जिससे नुक़सान जानने के बावजूद उसे छोड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है।

• **कलंक और शर्म :** ड्रग की लत को समाज में बहुत बुरा माना जाता है, कई बार दूसरी बीमारियों (जैसे HIV या मानसिक बीमारी) से भी ज़्यादा। इस सामाजिक बदनामी की वजह से व्यक्ति शर्म, अकेलेपन और अलगाव का शिकार हो जाता है, और इलाज लेने से भी कतराता है।

• **नैतिक गिरावट :** नशे की लत इंसान को ऐसे काम करने पर मजबूर कर सकती है जो समाज के नियमों और नैतिक मूल्यों के ख़िलाफ़ होते हैं। समाज में "नशेड़ी" की पहचान अक्सर अनैतिक और बिगड़े हुए व्यक्ति के रूप में की जाती है।

• **स्वतंत्र इच्छा की कमी :** "बीमारी मॉडल" (Disease Model) के अनुसार नशा एक ऐसी बीमारी है जो अपने आप लगती है और बार-बार लौटती है, इसलिए इसमें व्यक्ति की ज़िम्मेदारी कम मानी जाती है। जबकि "चॉइस मॉडल" (Choice Model) के अनुसार नशेड़ी व्यक्ति ख़ुद अपने फ़ैसले से अपने और दूसरों को नुक़सान पहुंचाता है।

कुछ ड्रग्स, जैसे ओपिओइड्स, अधिक ख़तरनाक होते हैं और इनकी लत दूसरों की तुलना में जल्दी लगती है। इस प्रकार व्यक्ति अपने ही बनाए हुए जाल में फंस जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है– "लत एक ऐसी जेल है जिसके ताले अंदर की ओर लगे होते हैं।"

2. सामाजिक और पारिवारिक प्रभाव

• **परिवार का टूटना :** नशे की लत परिवार में गहरा मानसिक बिगाड़ पैदा करता है, जैसे ग़ुस्सा, चिंता और अपराध बोध। इससे रिश्तों में तनाव, झगड़े, घरेलू हिंसा और अंततः परिवार टूटने तक की नौबत आ जाती है।

• **बच्चों की उपेक्षा :** नशे के आदी लोगों के बच्चे अक्सर उपेक्षित या अत्याचार का शिकार होते हैं। उन्हें मानसिक और शारीरिक विकास में समस्याएं आती हैं, व्यवहार बिगड़ता है और आगे चलकर उनके ख़ुद नशे की ओर जाने का ख़तरा बढ़ जाता है।

• **रिश्तों में दूरी :** नशा करने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे समाज से कटने लगता है। वह अपने शौक़ छोड़ देता है, सहारा देने वाले लोगों से दूर हो जाता है और उसका पूरा ध्यान केवल नशा पाने और करने में लग जाता है।

3. समाज और समुदाय पर प्रभाव

• **अपराध में वृद्धि :** ड्रग्स का उपयोग चोरी, डकैती, वेश्यावृत्ति और हिंसा जैसे अपराधों से जुड़ा होता है। यह अक्सर नशे के लिए पैसे जुटाने या नशे के प्रभाव के कारण होता है।

• **स्वास्थ्य व्यवस्था पर बोझ :** ड्रग की लत बढ़ने से अस्पतालों पर दबाव बढ़ता है, जैसे इमरजेंसी केस, इलाज का ख़र्च और पुनर्वास (रीहैबिलिटेशन) सेवाएं।

• **बीमारियों का फैलाव :** सुई साझा करने और जोखिम भरे यौन व्यवहार के कारण HIV/AIDS और हेपेटाइटिस C जैसी बीमारियां तेज़ी से फैलती हैं।

• **ग़रीबी और बेघरी :** नशे की वजह से काम छूट जाता है, बेरोज़गारी बढ़ती है, घर की स्थिति बिगड़ती है और कई लोग बेघर हो जाते हैं।

4. आर्थिक परिणाम

• **उत्पादकता में कमी :** नशे की वजह से काम में कमी, अनुपस्थिति और बेरोज़गारी बढ़ती है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था और व्यापार दोनों प्रभावित होते हैं।

• **सार्वजनिक ख़र्च :** समाज को पुलिस, जेल और इलाज पर बहुत अधिक ख़र्च करना पड़ता है।

5. सामाजिक सोच में बदलाव

• **ग़लत व्यवहार का सामान्य होना :** ख़ासकर युवाओं में ड्रग संस्कृति बढ़ने से ख़तरनाक व्यवहार सामान्य माना जाने लगता है।

• **इलाज और पुनर्वास पर ध्यान :** अब समाज का नज़रिया बदल रहा है। नशे को केवल अपराध नहीं, बल्कि एक स्वास्थ्य समस्या माना जा रहा है, और सज़ा के बजाय इलाज और सहयोग पर ज़ोर दिया जा रहा है–

धार्मिक प्रतिबंध

इस्लाम : दुनिया के लगभग सभी बड़े धर्मों में नशीली

चीज़ों के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ सख़्त नियम मौजूद हैं। इस्लाम में नशे की मनाही बहुत साफ़ और मज़बूत है। हर वह चीज़ जो नशा करे, शरीर को नुक़सान पहुंचाए या दिमाग़ को ख़राब करे, उसे "ख़म्र (नशीली चीज़)" कहा जाता है और यह हराम है। इस्लाम में नशा करना ही नहीं, बल्कि उसे बनाना, बेचना और फैलाना भी गुनाह है, क्योंकि यह इन्सान और समाज दोनों को नुक़सान पहुंचाता है। क़ुरआन की सूरह अल-माइदा (5:90-91) में नशीली चीज़ों और जुए को "शैतान का गंदा काम" कहा गया है और उनसे पूरी तरह बचने का हुक्म दिया गया है, ताकि इन्सान कामयाब हो सके। एक हदीस में अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया : "हर वह चीज़ जिससे नशा आए, ख़म्र है और हर ख़म्र हराम है।" एक और हदीस में है : "जिस चीज़ की ज़्यादा मात्रा नशा लाती है, उसकी थोड़ी मात्रा भी हराम है।"

इसके अलावा नशा करना अपने आपको नुक़सान पहुंचाना है, इसलिए मना भी है। क़ुरआन में है : "अपने हाथों से ख़ुद को बर्बादी में मत डालो।" (सूरह अल-बक़रा 2:195)

सज़ा : इस्लामी क़ानून में नशा करने पर सज़ा (हद) भी बताई गई है, जैसे 80 कोड़े। इसका मक़सद समाज को नैतिक, सामाजिक और आर्थिक बुराइयों से बचाना है।

हिंदू धर्म : हिंदू धर्म में भी नशे की चीज़ों को शरीर और मन के लिए नुक़सानदायक माना गया है। यह बुरा कर्म (कर्मफल) पैदा करता है और आध्यात्मिक उन्नति में रुकावट डालता है।

वैदिक और धार्मिक विचार : प्राचीन ग्रंथों में कुछ ख़ास अवसरों पर कुछ पदार्थों (जैसे सोमरस) का उल्लेख मिलता है, लेकिन सामान्य रूप से नशीली चीज़ों (मद्य) को ख़ासकर ब्राह्मणों और आध्यात्मिक जीवन जीने वालों के लिए ग़लत माना गया है। श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 16, श्लोक 16 में बुरी (असुरी) प्रवृत्तियों का वर्णन है, जो आज के समय में नशे के आदी व्यक्ति की सोच और जीवन से मिलती-जुलती हैं।

दुनिया के लगभग सभी बड़े धर्मों में नशीली चीज़ों के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ सख़्त नियम मौजूद हैं। इस्लाम में नशे की मनाही बहुत साफ़ और मज़बूत है। हर वह चीज़ जो नशा करे, शरीर को नुक़सान पहुंचाए या दिमाग़ को ख़राब करे, उसे "ख़म्र (नशीली चीज़)" कहा जाता है और यह हराम है। इस्लाम में नशा करना ही नहीं, बल्कि उसे बनाना, बेचना और फैलाना भी गुनाह है, क्योंकि यह इन्सान और समाज दोनों को नुक़सान पहुंचाता है।

सिख धर्म : सिख गुरुओं ने सिखों को नशीली चीज़ों से दूर रहने और सच्ची ख़ुशी व संतोष के लिए भगवान के नाम का सिमरण (Naam Simran) करने की शिक्षा दी है। सिख धर्म के अनुसार अनुशासित जीवन के बिना मन भगवान पर केंद्रित नहीं रह सकता। नशा दिमाग़ की स्पष्टता और चेतना को कमज़ोर कर देता है, जो आध्यात्मिक साधना के लिए बहुत ज़रूरी है। गुरु ग्रंथ साहिब (पृष्ठ 554) में कहा गया है: "नशीली शराब मत पियो, क्योंकि यह झूठ और पाप की ओर ले जाती है।"

ड्रग के ख़िलाफ़ सरकारी पहल : भारत सरकार ने समाज को ड्रग्स और नशीली चीज़ों की बुराई से बचाने के लिए कई क़दम उठाए हैं। भारत में ड्रग्स के ख़िलाफ़ क़ानून "ज़ीरो टॉलरेंस" नीति (NDPS Act 1985) पर आधारित है। 2014 के संशोधन में सज़ा के साथ-साथ इलाज पर भी ज़ोर दिया गया है। धारा 64A छोटी मात्रा के साथ पकड़े गए नशेड़ियों को, अगर वे इलाज के लिए आगे आते हैं, तो सज़ा से छूट दी जा सकती है। धारा-71 सरकार को नशा मुक्ति केंद्र स्थापित करने का निर्देश देती है। NALSA (DAWN) योजना 2025, यह नई योजना नशे के आदी लोगों को क़ानूनी सहायता, जागरूकता और पुनर्वास प्रदान करती है।

हम सब "Say No To Drugs" का नारा सुनते हैं। यह सिर्फ़ एक नारा नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण संदेश है। यह हमें अपने भविष्य, स्वास्थ्य और समाज की रक्षा करने की याद दिलाता है। ड्रग एक ख़तरनाक चीज़ है, जो इंसान की ज़िंदगी और उसकी क्षमता को बर्बाद कर देती है। कई लोग दर्द से बचने के लिए नशे का सहारा लेते हैं, लेकिन यह उन्हें सच्चाई से दूर कर देता है। इसलिए ख़ुद को बेहतर बनाने की आदत डालें, न कि नशे की। अगर आप एक दिन नशा छोड़ सकते हैं, तो हमेशा के लिए भी छोड़ सकते हैं। यक़ीन रखें—आप कर सकते हैं, और यही सफलता की आधी राह है। ■■

कहो, "हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतरी और जो इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान की ओर उतरी, और जो मूसा और ईसा को मिली, और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान की गई। हम उनमें से किसी (नबी) के बीच अन्तर नहीं करते और हम केवल उसी के आज्ञाकारी हैं।"

(क़ुरआन, 2:136)

Dr. Zaid Hamza
Udgir, Latur (M.H.)

अभिमत

नशामुक्ति में जनसहयोग की ज़रूरत

❖सुरेश सेठ

आधुनिकता का अर्थ क्या यह हो गया है कि इस देश की आधी कार्य योग्य आबादी अपनी समस्याओं के बारे में न सोचे और नशे में ही डूबी रहे ? आज के युवा जिस तरह का नशा कर रहे हैं, उसमें मदिरा और कच्ची शराब पुरानी चीज़ें हो गई हैं। अब हुक्का बार और अन्य मादक पदार्थों के सेवन के मामले देखे जा रहे हैं। सिंथेटिक नशे का दौर आ गया लगता है। ग़ौरतलब है कि नशे का कारोबार इतना बड़ा हो गया है कि किसी भी राज्य में नशे का धंधा करने वाले या इस व्यापार के सूत्रधार देश के सुदूर कोने या विदेश में भी मिल सकते हैं। अब तो ड्रोन से भी नशीले पदार्थों की तस्करी हो रही है। हाल यह कि स्कूलों और कॉलेजों तक नशीले पदार्थ पहुंच रहे हैं। युवा पीढ़ी असमय बूढ़ी हो रही है, क्योंकि देश ने उसे सस्ता या मुफ़्त राशन देकर भूख से न मरने देने की गारंटी तो दे दी, लेकिन रोज़गार की नहीं। देश गर्व से फूला नहीं समाता कि हम डिजिटल हो गए। साइबर क्रांति हो गई। मगर स्याह तस्वीर तो यह है कि देश के युवा बेरोज़गार हैं और नशे में डूब रहे हैं।

नशे के शिकार युवाओं की मौत की घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। देश के सरहदी इलाक़ों में नशे का प्रसार ख़तरनाक स्तर पर पहुंच चुका है। जब सरहद पर दुश्मन खड़े हों और मुक़ाबला करने वाली युवा पीढ़ी नशे की कंदराओं में भटक रही हो, तो इसका क्या परिणाम होगा, इसे समझा जा सकता है।

हम रोबोट युग की कल्पना कर रहे हैं, मगर सपने साकार करने वाली वह पीढ़ी ही तैयार नहीं कर रहे। इससे पहले युवा पीढ़ी पलायनवादी हो गई थी और डॉलर और पाउंड के मोह में सात समंदर पार जाकर करोड़पति हो जाना चाहती थी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के 'अमेरिका प्रथम' के नारे के बाद जब सभी समृद्ध देशों ने यही नीति अपना ली, तो हमारे युवा स्वदेश लौटने लगे। मगर उनके सपने धुंधले पड़ गए, क्योंकि यहां उनके लिए नौकरी नहीं थी। निराश होकर युवा नशे में डूब रहे हैं। दूसरी ओर, व्यावसायियों ने एक के बाद एक विश्वविद्यालय परिसर तो खड़े कर दिए, लेकिन पुस्तक संस्कृति धीरे-धीरे लुप्त हो गई। जहां तक हमारे पाठ्यक्रमों, अध्यापन और शोध का संबंध है, उसमें वह परिवर्तन नहीं आया जो इस तेज़ी से बदलते हुए युग की कल्पना करने वाले देश में आना चाहिए था। सवाल है कि इस बीच नशीले पदार्थों का कारोबार कैसे खड़ा हो गया? युवा कहे जाने वाले इस देश में बड़ी संख्या में नौजवान नशे की गिरफ़्त में क्यों नज़र आते हैं ?

स्थिति यह है कि नशे के शिकार युवाओं की मौत की घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। देश के सरहदी इलाक़ों में नशे का प्रसार ख़तरनाक स्तर पर पहुंच चुका है। जब सरहद पर दुश्मन खड़े हों और मुक़ाबला करने वाली युवा पीढ़ी नशे की कंदराओं में भटक रही हो, तो इसका क्या परिणाम होगा, इसे समझा जा सकता है। कभी सोचा भी नहीं गया था कि देश के कुछ नागरिक चंद पैसे के लिए शत्रु देशों के लिए जासूसी करेंगे और इसकी आड़ में वे नशे का कारोबार भी खड़ा कर लेंगे। कौन-सा राज्य इससे बचा है? यह किसी से छिपा नहीं है कि सरहदी राज्यों जैसे जम्मू-कश्मीर, राजस्थान और पंजाब में नशाख़ोरी बढ़ी है। तमाम अभियानों के बावजूद नशीले पदार्थों के तस्कर यहां पांव पसार रहे हैं। इन राज्यों में नौजवानों की ज़िंदगी बर्बाद हो रही है।

हैरत की बात है कि कुछ माफ़िया नशे का कारोबार फैला कर इतनी ऊंचाई पर पहुंच जाते हैं कि वे देश की राजनीति को संचालित करने का सपना देखने लगते हैं। इन समस्याओं का समाधान बुलडोज़र संस्कृति नहीं है। दुखद है कि अब

यह संस्कृति हरियाणा और पंजाब में भी दिख रही है। तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद अब मानवीय मूल्यों को बचाने की जद्दोजहद भी सामने आ रही है। अभी पिछले दिनों पंजाब के गांव नंगल कलां में एक नई तस्वीर नज़र आई। यहां नशे के शिकार एक युवक की मौत हो गई। हालांकि ऐसी घटनाएं पहले भी हुईं और मां-बाप इसे अपनी क़िस्मत मान कर चुप बैठ गए। मगर अब लोग विरोध में आगे आ रहे हैं।

एक नौजवान नशे के कारण इस गांव में मरा, तो उसके परिजनों ने गांव के एक परिवार पर नशीले पदार्थ बेचने का आरोप लगाकर अपने बेटे की मौत का ज़िम्मेदार ठहराया। नई बात यह थी कि यहां पंचायत जागी। उसने सख़्त कार्रवाई करते हुए आरोपी परिवार को गांव से निष्कासित करने का प्रस्ताव पारित कर दिया। उनकी संपत्ति ढहाने के लिए दबाव बनाया साथ ही यह कह दिया कि अगर पुलिस और प्रशासन यह कार्रवाई नहीं करते, तो ग्रामीण ख़ुद यह क़दम उठाएंगे।

पंजाब में नशाख़ोरी के ख़िलाफ़ पिछले एक वर्ष से अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस ने छापे मार कर सैकड़ों तस्कर पकड़े हैं। इनमें से बहुत सारे आरोपियों को सज़ा भी दिलवाई है। हज़ारों किलो नशीले पदार्थ भी बरामद किए गए हैं। मगर समस्या दूर नहीं हुई है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक़ पंजाब में 2025 में नशाख़ोरी से चौदह लोगों की जान गई।

यह हालत केवल पंजाब की ही नहीं, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की भी है। लोगों ने घरों में अवैध शराब की भट्ठियां लगा रखी हैं। ऐसे में अवैध शराब का धंधा ख़ूब फल-फूल रहा है। पिछले दिनों पंजाब में यह आवाज़ उठती रही कि राज्य में अफ़ीम की वैध खेती करने की इजाज़त दे दी जाए। यह इजाज़त नहीं दी गई, लेकिन अफ़ीम और भुक्की (चूरा पोस्त) बड़े पैमाने पर पंजाब में बिकती है। चिट्टा खाकर नौजवान बर्बाद हो रहे हैं। यह एक प्रकार का सिंथेटिक नशा है। इसे गंभीरता से लेना होगा। मंचों पर भाषण देने से जन जागरण नहीं होगा। पंजाब में नशाख़ोरी की समस्या बहुत भयावह हो गई है। इसलिए मानसा ज़िले के नंगल कलां में ही नहीं, अन्य ज़िलों में भी लोग अपने बच्चों को नशे के चंगुल में जाते देखकर आवाज़ उठाने लगे हैं।

पंजाब के क़रीब 4500 गांवों ने ख़ुद को 'नशामुक्त' घोषित कर दिया है। इसका कारण यह है कि गांवों में पढ़े-लिखे लोगों के साथ पंचायतें भी सक्रिय हो रही हैं। बेहतर तो यही होगा कि जागरूक नागरिक नशीले पदार्थों का काला कारोबार होता देखें, तो उसके ख़िलाफ़ सामूहिक रूप से आवाज़ उठाएं। यह बात किताबी लगती है, लेकिन पंजाब में इसमें थोड़ी सफलता दिखी है। जब हम नए युग की कल्पना करते हैं, तो उसमें प्रशासन और राजनीतिक नेतृत्व के साथ नागरिकों को भी एकजुट होना चाहिए। यह समस्या चूंकि हर राज्य में गंभीर होती जा रही है, तो ज़रूरी है कि कहीं से आवाज़ उठे, कोई सार्थक पहल हो।

यह आंकड़ा भी सामने है कि पंजाब के क़रीब 4500 गांवों ने ख़ुद को 'नशामुक्त' घोषित कर दिया है। इसका कारण यह है कि गांवों में पढ़े-लिखे लोगों के साथ पंचायतें भी सक्रिय हो रही हैं। बेहतर तो यही होगा कि जागरूक नागरिक नशीले पदार्थों का काला कारोबार होता देखें, तो उसके ख़िलाफ़ सामूहिक रूप से आवाज़ उठाएं और प्रशासन को सूचित करें। यह बात किताबी लगती है, लेकिन पंजाब में इसमें थोड़ी सफलता दिखी है। यह छोटी ही सही, लेकिन सार्थक आवाज़ होगी।

जब हम नए युग की कल्पना करते हैं, तो उसमें प्रशासन और राजनीतिक नेतृत्व के साथ नागरिकों को भी एकजुट होना चाहिए। यह समस्या चूंकि हर राज्य में गंभीर होती जा रही है, तो ज़रूरी है कि कहीं से आवाज़ उठे, कोई सार्थक पहल हो। गंभीरता से कार्रवाई हो, तो नशाख़ोरी ख़त्म होते देर नहीं लगेगी। इसके लिए दो बातें बहुत ज़रूरी हैं। एक तो प्रशासन और राजनीतिक नेतृत्व की प्रतिबद्धता तथा दूसरे जनसमूहों की ईमानदारी से पहल। ऐसा अभी तक संभव नहीं हुआ, लेकिन अगर कहीं भी जन-जागरण होता है, तो यह अपने आप में आशा की एक किरण है। ■■

(साभार : जनसत्ता)

समाधान

नशा : पूर्ण निषेध ही एकमात्र समाधान

❖सुफ़ियान अहमद

यह तो सर्वमान्य सत्य है कि हर प्रकार का नशा विनाशकारी है, लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब हम इसके दुष्प्रभावों को जानते हैं, तो इसे समाज में स्थान क्यों देते हैं? इतिहास और वर्तमान दोनों इस बात के साक्षी हैं कि नशे के ख़िलाफ़ "आंशिक नियंत्रण" (partial control) कभी सफल नहीं हुआ। गांधीजी ने नशामुक्त समाज की कल्पना करते हुए कहा था कि "यदि उन्हें थोड़े समय के लिए भी सत्ता मिले, तो वे बिना किसी मुआवज़े के शराब की सभी दुकानों को बंद कर देंगे।" उनका यह दृष्टिकोण केवल नैतिक आग्रह नहीं, बल्कि एक सामाजिक यथार्थ की समझ पर आधारित था।

मूल प्रश्न

मानव सभ्यता ने विज्ञान, तकनीक और ज्ञान के क्षेत्र में जितनी ऊंचाइयां छुई हैं, उतनी ही गहराइयों में वह अपनी कुछ कमज़ोरियों के कारण गिरती भी रही है। नशा इन्हीं कमज़ोरियों में एक सबसे ख़तरनाक प्रवृत्ति है । नशा मनुष्य को उसके मूल स्वरूप से दूर कर देता है और उसे एक ऐसे चक्र में फंसा देता है, जहां से निकलना अत्यंत कठिन हो जाता है।

नशे की शुरुआत अक्सर मामूली होती है—दोस्तों के साथ, शौक़ में या तनाव दूर करने के नाम पर, बाद में यह व्यक्ति की लत बन जाती है। धीरे-धीरे यह व्यक्ति, परिवार और समाज को भीतर से खोखला कर देने वाली एक ऐसी बीमारी बन जाती है, जो इंसान की चेतना, विवेक और नैतिकता—तीनों को निगल जाती है। आज जब अनेक प्रकार के नशों को सामान्य माना जाने लगा है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम इस विषय पर गंभीरता से विचार करें और इसके पूर्ण निषेध (Total Prohibition) की आवश्यकता को समझें।

सामान्यतः नशे का अर्थ केवल शराब (Alcohol) या ड्रग्स (Drugs) तक सीमित समझ लिया जाता है, जबकि वास्तविकता इससे कहीं व्यापक है। तंबाकू (Tobacco), गुटखा, सिगरेट, बीड़ी, अफ़ीम, चरस, गांजा, सिंथेटिक ड्रग्स,



यहां तक कि कुछ दवाओं का दुरुपयोग—ये सभी नशे की श्रेणी में आते हैं। यदि इसके प्रभावों को गहराई से समझा जाए, तो स्पष्ट होता है कि नशे की असली त्रासदी तीन स्तरों पर सामने आती है—परिवार का टूटना, शारीरिक एवं आर्थिक बर्बादी और अपराध में वृद्धि। यही तीनों मिलकर एक ऐसी श्रृंखला बनाते हैं, जो समाज के संतुलन को छिन्न-भिन्न कर देती है।

परिवार एवं समाज पर दुष्प्रभाव

परिवार किसी भी समाज की मूल इकाई (basic unit) होता है। यही वह स्थान है जहां व्यक्ति अपने जीवन के मूल संस्कार और मूल्य सीखता है। लेकिन जब इस इकाई में नशे का प्रवेश होता है, तो सबसे पहले यही संरचना दरकने लगती है।

नशे का आदी व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी ज़िम्मेदारियों से विमुख होने लगता है। उसका व्यवहार स्थिर नहीं रहता। कभी क्रोध, कभी उदासीनता तो कभी हिंसा। पति-पत्नी के बीच

विश्वास कमज़ोर पड़ता है, संवाद समाप्त होने लगता है और आपसी सम्मान की जगह आरोप-प्रत्यारोप ले लेते हैं।

इसका सबसे गहरा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। वे एक ऐसे वातावरण में बड़े होते हैं जहां सुरक्षा (security) और स्नेह (affection) की जगह भय और असुरक्षा का वास होता है। ऐसे बच्चे या तो मानसिक रूप से दबे हुए व्यक्तित्व के साथ बड़े होते हैं या फिर उसी नशे की प्रवृत्ति को अपनाने लगते हैं। इस प्रकार, नशा केवल एक परिवार को नहीं तोड़ता, बल्कि वह एक पीढ़ीगत विघटन (intergenerational breakdown) की शुरुआत करता है। जब परिवार बिखरते हैं तो अंततः समाज भी पतन की ओर जाने लगता है।

आर्थिक बर्बादी और राष्ट्रीय क्षति

नशा आर्थिक दृष्टि से एक ऐसे रिसाव (leakage) की तरह है, जो धीरे-धीरे पूरे परिवार को आर्थिक रूप से खोखला कर देता है। प्रारंभ में यह ख़र्च मामूली लगता है, लेकिन समय के साथ यह एक स्थायी और विनाशकारी बोझ बन जाता है। व्यक्ति अपनी आय का बड़ा हिस्सा नशे पर ख़र्च करने लगता है, जिससे घर की आवश्यकताओं—जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य की सुरक्षा पर सीधा असर पड़ता है। परिणामस्वरूप, परिवार क़र्ज़ और आर्थिक अस्थिरता की ओर बढ़ने लगता है।

> **“यह तो सर्वमान्य सत्य है कि हर प्रकार का नशा विनाशकारी है, लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब हम इसके दुष्प्रभावों को जानते हैं, तो इसे समाज में स्थान क्यों देते हैं? इतिहास और वर्तमान दोनों इस बात के साक्षी हैं कि नशे के ख़िलाफ़ “आंशिक नियंत्रण” (partial control) कभी सफल नहीं हुआ।”**

नशे का प्रभाव केवल ख़र्च तक सीमित नहीं रहता; यह व्यक्ति की कार्यक्षमता (productivity) को भी प्रभावित करता है। काम में लापरवाही, अनुपस्थिति और अंततः रोज़गार का संकट—ये सभी उसी प्रक्रिया के स्वाभाविक परिणाम हैं।

जब यही स्थिति समाज के बड़े हिस्से में फैलती है, तो इसका प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर भी दिखाई देता है। श्रमशक्ति कमज़ोर होती है, स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव बढ़ता है और आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ जाती है।

यहां एक गंभीर विरोधाभास भी सामने आता है—जिस नशे से समाज को हानि होती है, वही कई बार राजस्व (revenue) का स्रोत बन जाता है। यह स्थिति नैतिक प्रश्न खड़ा करती है कि क्या आर्थिक लाभ के लिए सामाजिक विनाश को स्वीकार किया जा सकता है?

विशेषज्ञों के अध्ययन बताते हैं कि नशे से मिलने वाले राजस्व की तुलना में उससे उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याओं, अपराध और सामाजिक विघटन पर अधिक ख़र्च करना पड़ता है। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या यह राजस्व वास्तव में लाभ है, या एक छिपा हुआ घाटा?

अपराधों में वृद्धि : नशे का अनिवार्य परिणाम

नशा और अपराध के बीच गहरा और सीधा संबंध है। नशा व्यक्ति के आत्म-नियंत्रण (self-control) को समाप्त कर देता है और उसकी निर्णय क्षमता (judgment) को कमज़ोर बना देता है। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति ऐसे कार्य करने लगता है, जिन्हें वह सामान्य अवस्था में कभी नहीं करता। घरेलू हिंसा, सड़क दुर्घटनाएं और यहां तक कि चोरी, लूट, हत्या और बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों के पीछे अक्सर नशे की भूमिका पाई जाती है। इस प्रकार, नशा केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि एक सामाजिक आपदा (Social Disaster) है।

इसके अतिरिक्त, नशे का अवैध व्यापार एक संगठित अपराध-तंत्र (organized crime network) को जन्म देता है। ड्रग्स और अन्य मादक पदार्थों की तस्करी केवल एक अवैध गतिविधि नहीं, बल्कि एक ऐसी समानांतर व्यवस्था है, जो क़ानून व्यवस्था को सीधे चुनौती देती है।

इस प्रकार, नशा केवल अपराध को जन्म नहीं देता, बल्कि वह एक ऐसी स्थिति पैदा करता है जहां अपराध स्वयं एक “व्यवसाय” (business) बन जाता है।

सामूहिक संकल्प

वस्तुतः यदि इन तीनों पहलुओं—परिवार का टूटना, आर्थिक बर्बादी और अपराध में वृद्धि—को एक साथ देखा जाए, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि नशा एक अकेली समस्या नहीं, बल्कि एक श्रृंखलाबद्ध संकट (chain re-

action) है। यह व्यक्ति से शुरू होकर परिवार, समाज और राष्ट्र में अस्थिरता पैदा करता है। इसका समाधान सामाजिक जागरूकता और सामूहिक संकल्प (Collective Resolution) है।

हमें यह ठान लेना होगा कि हम न केवल स्वयं नशे से दूर रहेंगे, बल्कि दूसरों को भी इससे बचाने का प्रयास करेंगे। जब व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र—सभी मिलकर नशामुक्ति का संकल्प लेंगे, तभी एक स्वस्थ, सशक्त और नैतिक समाज का निर्माण संभव होगा।

हमें यह ठान लेना होगा कि हम न केवल स्वयं नशे से दूर रहेंगे, बल्कि दूसरों को भी इससे बचाने का प्रयास करेंगे। जब व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र—सभी मिलकर नशामुक्ति का संकल्प लेंगे, तभी एक स्वस्थ, सशक्त और नैतिक समाज का निर्माण संभव होगा।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण

मनुष्य को अन्य प्राणियों से जो चीज़ अलग करती है, वह उसकी सोचने-समझने और सही-ग़लत का निर्णय लेने की क्षमता है। जब यही क्षमता नशे के कारण प्रभावित होती है, तो व्यक्ति केवल शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक रूप से भी पतन की ओर बढ़ता है। नशे का सबसे गहरा आघात मनुष्य की चेतना पर होता है। जो चीज़ मनुष्य की चेतना को नष्ट करती है, वह अंततः उसके पूरे सामाजिक अस्तित्व को भी नष्ट कर देती है।

पवित्र ग्रंथों में स्पष्ट संकेत मिलता है कि जो चीज़ें इंसान की बुद्धि और विवेक को नष्ट करें, उनसे दूर रहना चाहिए। क़ुरआन में कहा गया है–

"निस्संदेह नशे की चीज़ें और जुआ...ये सब शैतानी काम हैं, अतः इनसे बचो ताकि तुम सफल हो सको।"

(क़ुरआन, 5:90)

यह आयत स्पष्ट रूप से बताती है कि नशा केवल शारीरिक हानि नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक पतन भी है। इंसान की असली ताक़त उसके आत्मसंयम (Self-Control) में है, और नशा इस शक्ति को समाप्त कर देता है।

पूर्ण निषेध ही एकमात्र समाधान

भारतीय संविधान के नीति-निर्देशक सिद्धांतों (Directive Principles of State Policy) में यह स्पष्ट कहा गया है कि राज्य का कर्तव्य है कि वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक पदार्थों के उपभोग पर प्रतिबंध लगाए। इसके बावजूद, वास्तविकता यह है कि नीतियां अक्सर राजस्व और राजनीति के दबाव में आकार लेती हैं। यही कारण है कि नशे के विरुद्ध संघर्ष अधूरा रह जाता है।

वास्तविकता यह है कि नशे का कारोबार अपने आप में एक बड़ा अपराध-तंत्र है। मादक पदार्थों की तस्करी, अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क, डार्कनेट के ज़रिए लेन-देन और आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल, ये सब इस बात के संकेत हैं कि नशा अब एक संगठित उद्योग बन चुका है। इसलिए नशे के विरुद्ध संघर्ष एक सामूहिक सामाजिक ज़िम्मेदारी है। इसका समाधान आंशिक नियंत्रण नहीं, बल्कि पूर्ण निषेध (total rejection) और एक जागरूक समाज के निर्माण में निहित है।

इस संबंध में धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें केवल उपदेश देने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि सक्रिय रूप से नशा-मुक्ति के अभियान में भाग लेना चाहिए। जब समाज यह तय कर लेगा कि चेतना को कुंद करने वाली हर चीज़ अस्वीकार्य है, तभी एक स्वस्थ, सशक्त और नैतिक समाज की स्थापना संभव होगी। ■■



फ़रार

• मुहियुद्दीन ग़ाज़ी

और जज़्बात भी हैं, जज़्बा-ए-दावत के सिवा
हैं मिशन और बहुत दीन की ख़िदमत के सिवा
रास्ते और भी हैं राह-ए-अज़ीमत के सिवा
इशरतें और भी हैं इशरत-ए-जन्नत के सिवा

जाम-ए-उल्फ़त तेरी छांव में पिया था मैंने
जिस्मो-जां तेरे लिए वक़्फ़ किया था मैंने
आप अपने से जो पैमान लिया था मैंने
यादे-रफ़्ता है वह दावा जो किया था मैंने

नौकरी भूत की मानिन्द मेरे सर पे सवार
ज़ेहन उलझा हुआ रहता है मेरा, लैलो-नहार
ख़ीरा करती है निगाहों को चमकती हुई कार
जॉब मिल जाएगी अच्छी-सी तो आएगा क़रार

मेरी शादी जो हुई इसके तक़ाज़े भी तो हैं
मुझसे वाबस्ता मेरी बीवी के सपने भी तो हैं
अ़ज़्म-ए-मुहकम जो बदल डालें वह ग़मज़े भी तो हैं
हाए वह अ़ज़्म-शिकन अश्क के क़तरे भी तो हैं

ये जिगर गोशे मेरे और ये उनकी मुस्कान
इनके फ्यूचर से जुड़े हैं मेरे कितने अरमान
करियर कैसे बनाऊं यही रहता है ध्यान
इसी उलझन में तगो ताज़ में रहता हूं मैं हर आन

मुझसे पहली-सी तवज्जो मेरी तहरीक न मांग

(सितम्बर 2003)

कठिन शब्द : जज़्बात-भावनाएं, जज़्बा-ए-दावत—लोगों को संदेश/धर्म की ओर बुलाने का उत्साह, राहे-अज़ीमत-कठिन और महान मार्ग, इशरतें-सुख, आनंद, इशरत-ए-जन्नत—स्वर्ग का आनंद, जाम-ए-उल्फ़त—प्रेम का प्याला , वक़्फ़—समर्पित करना, पैमां—वचन/प्रतिज्ञा, यादे-रफ़्ता—बीती हुई याद, लैलो-नहार—दिन-रात, ख़ीरा करना—चकाचौंध, अज़्मे-मुहकम—दृढ़ निश्चय, ग़मज़े—नाज़-नखरे, अज़्म-शिकन—संकल्प तोड़ देने वाला, जिगर-गोशे—दिल के टुकड़े (संतान), तगो-ताज़—लगातार भागदौड़, हर आन—हर क्षण, तहरीक—आंदोलन।

फ़रार के जवाब में क़रार

• मौलाना अबुल बयान हम्माद (रह.)

कोई जज़्बा ही नहीं जज़्बा-ए-दावत के सिवा
हेच हैं सारे मिशन दीन की ख़िदमत के सिवा
रास्ता है भी कहां राह-ए-अज़ीमत के सिवा
है जहन्नम की तपिश इशरत-ए-जन्नत के सिवा

जामे-तौहीद अज़ल में जो पिया था मैंने
वादा-ए-बन्दगी-ए-रब जो किया था मैंने
अपने माबूद को पहचान लिया था मैंने
याद रखा है वह वादा जो किया था मैंने

धुन यही एक हमेशा है मेरे सर पे सवार
दीन की ख़िदमत बेलौस करूं लैलो-नहार
कोई बंगला मुझे मतलूब न दरकार है कार
मेरा मौला मुझे मिल जाए तो आएगा क़रार

जो मिली ज़ीस्त मुझे इसके तक़ाज़े भी हैं
कितने सुन्दर हैं मेरे दिल में जो सपने भी हैं
मैंने ताग़ूत के नक़्शे कभी बदले भी हैं
तख़्त उलटे भी हैं और ताज गिराए भी हैं

शामिले-हाल जो हो नुसरते-ग़ैबी हर आन
जल्द हो जाएंगे पूरे मेरे सारे अरमान
आख़िरत की है मुझे फ़िक्र है ईश्वर का ध्यान
कामयाबी का नज़र आता है मुझको इमकान

मुझसे कुछ और तवज्जो मेरी तहरीक तो मांग

(अक्तूबर 2003)

कठिन शब्द : हेच—तुच्छ / नगण्य, जहन्नम—नरक, तपिश—तीव्र गर्मी/आंच , जामे-तौहीद—एकेश्वरवाद का प्याला/ईश्वर की एकता का बोध, अज़ल—अनादि काल / सृष्टि से पहले का समय, वादा-ए-बन्दगी—ईश्वर की बन्दगी का वचन, बन्दगी—भक्ति/उपासना/संपूर्ण समर्पण, माबूद—आराध्य/पूज्य ईश्वर, बेलौस—निस्वार्थ, मतलूब—इच्छित/ वांछित, दरकार—आवश्यकता, मौला—स्वामी / पालनकर्ता ईश्वर, क़रार—शांति / संतोष, ज़ीस्त—जीवन, ताग़ूत—ईश्वर-विरोधी सत्ता/अत्याचारी शक्ति, साथ देने वाला, नुसरते-ग़ैबी—ईश्वरीय सहायता।

मंथन

युद्ध की मर्यादा : कब आवश्यक, कब अपराध ?

❖सुफ़ियान अहमद

युद्ध मानव-इतिहास का सबसे जटिल और विवादास्पद प्रश्न है। एक ओर मानव-सभ्यता की नींव इस सिद्धांत पर टिकी है कि प्रत्येक जीवन पवित्र है, उसका संरक्षण सर्वोच्च नैतिक कर्तव्य है; दूसरी ओर इतिहास के पन्ने इस सच्चाई के भी साक्षी हैं कि अन्याय, अत्याचार और उपद्रव के विरुद्ध कभी-कभी संघर्ष अपरिहार्य हो जाता है। यही द्वंद्व हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हर युद्ध अन्यायपूर्ण है, या क्या कुछ परिस्थितियां ऐसी भी होती हैं जहां युद्ध न्याय का साधन बन जाता है?

एक ओर जहां अंधी अहिंसा अत्याचार को खुली छूट दे सकती है, तो वहीं दूसरी ओर असीमित युद्ध-प्रवृत्ति मानवता को विनाश के गर्त में धकेल देती है। वस्तुतः, युद्ध को न तो पूर्णतः नकारा जा सकता है और न ही उसे बिना शर्त स्वीकार किया जा सकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि युद्ध को नैतिक कसौटी पर परखा जाए। एक ऐसी कसौटी, जो उसे मानवता के हित में सीमित और नियंत्रित रख सके।

इस दृष्टि से वही युद्ध उचित ठहराया जा सकता है, जो किसी आक्रामक महत्वाकांक्षा का परिणाम न होकर विवशता की उपज हो; जिसका उद्देश्य वर्चस्व या विस्तार नहीं, बल्कि न्याय की स्थापना हो; और जो अत्याचार के उन्मूलन के साथ ही समाप्त हो जाए। ऐसा युद्ध संतुलन और शांति की पुनर्स्थापना का माध्यम बन सकता है।

इसलिए युद्ध की नैतिकता, उसकी सीमाओं और उसके औचित्य की पड़ताल करना ज़रूरी है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि मानवता के हित में कब संघर्ष आवश्यक हो जाता है, और कब वही संघर्ष मानवता के विरुद्ध अपराध बन जाता है।

किसी भी सभ्य समाज की पहली पहचान यह है कि वह मानव-जीवन की रक्षा को सर्वोच्च मूल्य प्रदान करता है। जीवन की सुरक्षा एक साझा सामाजिक अनुबंध है, जिसके बिना न तो व्यवस्था क़ायम रह सकती है और न ही मनुष्य के बीच विश्वास का कोई ताना-बाना बुना जा सकता है। इसलिए हर नैतिक और विधिक व्यवस्था का पहला सिद्धांत यही होता है कि निर्दोष रक्त की रक्षा की जाए।

किन्तु यही सिद्धांत एक और गहरी वास्तविकता की ओर भी संकेत करता है कि मानव-प्रकृति पूर्णतः निष्कलुष नहीं है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब मनुष्य ने अपनी सीमाएं लांघीं, तब-तब उसने अपने स्वार्थ, लालच और अहंकार के कारण दूसरों के अधिकारों का हनन किया। ऐसी स्थिति में यदि केवल उपदेश और नैतिकता का सहारा लिया जाए, तो वह अक्सर अपर्याप्त सिद्ध होता है। क्योंकि जहां अन्याय अपनी चरम अवस्था पर पहुंच जाता है, वहां केवल शब्दों की शक्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति की आवश्यकता होती है जो उस अन्याय को रोक सके।

यहीं से संघर्ष की आवश्यकता जन्म लेती है, परन्तु यह संघर्ष अपने आप में लक्ष्य नहीं, बल्कि एक माध्यम है। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति या समूह का विनाश नहीं, बल्कि उस अन्याय का अंत है जो मानवता को आहत कर रहा है।

इस संदर्भ में यह समझना भी आवश्यक है कि न्याय की स्थापना केवल दंड के माध्यम से नहीं, बल्कि संतुलन के माध्यम से होती है। दंड तभी सार्थक होता है जब वह अत्याचार को समाप्त कर दे और समाज को पुनः शांति की अवस्था में लौटा दे। यदि दंड ही निरंतरता का रूप ले ले, तो वह स्वयं अन्याय में परिवर्तित हो जाता है।

आज हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या हम युद्ध को केवल विनाश का पर्याय मानें, या उसे एक ऐसी विवशता के रूप में समझें, जो विशेष परिस्थितियों में न्याय की पुनर्स्थापना का माध्यम बन सकती है? इसलिए इस सवाल का जवाब खोजा जाना चाहिए कि संघर्ष और शांति के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जाए, ताकि मानवता अपने मूल उद्देश्य—शांति, न्याय और सहअस्तित्व—की ओर अग्रसर रह सके।

युद्ध की मर्यादा

मानव-जीवन की पवित्रता को स्वीकार करने के बाद सबसे पहला प्रश्न यही उठता है कि यदि जीवन इतना

मूल्यवान है, तो फिर युद्ध जैसी स्थिति को किसी भी रूप में कैसे उचित ठहराया जा सकता है? इसका उत्तर मानव-प्रकृति और सामाजिक व्यवस्था की जटिलता में निहित है। मनुष्यों में सद्गुणों के साथ-साथ स्वार्थ, लालच, क्रोध और वर्चस्व की प्रवृत्तियां भी विद्यमान हैं। जब ये प्रवृत्तियां अनियंत्रित हो जाती हैं, तब वे समाज में अन्याय और अराजकता को जन्म देती हैं।

ऐसी स्थिति में यदि कोई व्यवस्था इन दुष्प्रवृत्तियों को रोकने में असफल रहती है, तो वह स्वयं अपने अस्तित्व के संकट में पड़ जाती है। इसलिए किसी भी न्यायपूर्ण समाज के लिए यह अनिवार्य है कि वह केवल नैतिक उपदेशों तक सीमित न रहे, बल्कि उन उपदेशों के पालन को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक शक्ति भी अपने पास रखे। यही वह बिंदु है जहां युद्ध या संघर्ष की अवधारणा एक नैतिक आवश्यकता के रूप में सामने आती है।

यहां यह समझ लेना अत्यंत आवश्यक है कि यह शक्ति असीमित नहीं हो सकती। यदि शक्ति को बिना किसी नैतिक बंधन के प्रयोग करने की अनुमति दे दी जाए, तो वह स्वयं अत्याचार का रूप ले लेती है। इसलिए युद्ध की वैधता केवल उसके उद्देश्य से नहीं, बल्कि उसकी सीमाओं से भी निर्धारित होती है।

न्याय और प्रतिशोध का अंतर

युद्ध की नैतिकता को समझने में सबसे बड़ी भूल तब होती है जब न्याय और प्रतिशोध को एक ही समझ लिया जाता है। प्रतिशोध भावनाओं से प्रेरित होता है, जबकि न्याय विवेक और संतुलन पर आधारित होता है। प्रतिशोध का उद्देश्य पीड़ा का प्रत्युत्तर देना होता है, जबकि न्याय का उद्देश्य उस पीड़ा के स्रोत को समाप्त करना होता है।

जब युद्ध प्रतिशोध की भावना से लड़ा जाता है, तो वह हिंसा की निरंतर श्रृंखला को जन्म देता है। इसके विपरीत, जब युद्ध न्याय के लिए लड़ा जाता है, तो उसका एक स्पष्ट लक्ष्य, अत्याचार का अंत और शांति की पुनर्स्थापना होता है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि किसी भी संघर्ष में यह स्पष्ट किया जाए कि उसका उद्देश्य क्या है।

अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष : एक सामाजिक दायित्व

मानव समाज अधिकारों और कर्तव्यों दोनों से संचालित होता है। यदि किसी व्यक्ति या समूह पर अत्याचार हो रहा हो और समाज के अन्य लोग केवल दर्शक बने रहें, तो यह भी एक प्रकार का अन्याय ही है। इसलिए अत्याचार के विरुद्ध खड़ा होना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक सामाजिक दायित्व है।

यह दायित्व केवल शब्दों तक सीमित नहीं रह सकता। जब अत्याचार अपनी सीमा पार कर जाता है और शांति के सभी मार्ग बंद हो जाते हैं, तब उसे रोकने के लिए शक्ति का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। यह शक्ति केवल आत्म-रक्षा के लिए ही नहीं, बल्कि उन लोगों की रक्षा के लिए भी होती है जो स्वयं अपनी रक्षा करने में असमर्थ हैं। युद्ध किसी जाति, धर्म या राष्ट्र के विरुद्ध नहीं होना चाहिए, बल्कि उस अन्याय के विरुद्ध होना चाहिए जो मानवता के लिए ख़तरा बन चुका हो। क़ुरआन इसकी ओर स्पष्ट संकेत करते हुए कहता है–

"आख़िर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उन लोगों के लिए नहीं लड़ते हो जो धरती में दबा कर रखे गए हैं।"

(क़ुरआन, 4:75)

युद्ध की नैतिकता और उसकी सीमाएं

यदि कोई संघर्ष अपने मूल उद्देश्य की पूर्ति के बाद भी जारी रहता है, तो वह अपनी नैतिकता खो देता है। युद्ध का उद्देश्य यह होना चाहिए कि अन्याय को समाप्त कर दिया जाए और एक संतुलित व्यवस्था स्थापित की जाए।

इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं जहां युद्ध अपने उद्देश्य से भटककर स्वयं ही एक समस्या बन गया। ऐसे युद्धों ने न केवल मानव-जीवन को नष्ट किया, बल्कि समाज के नैतिक मूल्यों को भी क्षीण कर दिया। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि युद्ध को हमेशा उसकी नैतिक सीमाओं में रखा जाए।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में यह प्रश्न और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। आधुनिक युद्ध केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रह गए हैं; उनका प्रभाव पूरे मानव समाज पर पड़ता है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि युद्ध को केवल नैतिक दृष्टिकोण से ही परखा जाए।

आज अनेक राष्ट्र अपने संघर्षों को न्याय के नाम पर प्रस्तुत करते हैं, किन्तु वास्तविकता में उनके पीछे शक्ति और स्वार्थ की राजनीति छिपी होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक युद्ध को न्याय की कसौटी पर परखा जाए।

सही युद्ध वही है जो अंतिम उपाय के तौर पर लड़ा जाए, न्याय की स्थापना के लिए लड़ा जाए और अत्याचार के समाप्त होते ही रुक जाए। इसके विपरीत, जो युद्ध स्वार्थ, वर्चस्व या प्रतिशोध से प्रेरित हो, वह मानवता के विरुद्ध अपराध बन जाता है। ■■

ईरान-इस्राइल जंग : समस्या और समाधान

❖इस्लाम हुसैन



ईरान-इस्राइल की मौजूदा जंग के बीच विश्व के अधिकांश देशों, विशेषकर यूरोपीय देशों ने जिस तरह इस्राइल की आलोचना की है और अमेरिकी जुगलबंदी के साथ उसकी आक्रामकता का विरोध किया है, उससे गांधी जी के उन विचारों की अहमियत बढ़ जाती है, जो उन्होंने इस्राइल की एक ऑपरेशन के ज़रिये ज़बरदस्ती पैदाइश के बारे में कहे थे। उन्होंने कहा था कि फ़िलिस्तीनियों का हक़ छीनकर यहूदियों के लिए इस्राइल का नया मुल्क बनाना बहुत ग़लत है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि यहूदी जिन-जिन देशों में रह रहे हैं, वहीं सलामती के साथ रहें। उनका यह भी कहना था कि यदि यहूदियों के लिए कोई राज्य बनाना आवश्यक हो, तो उसे यूरोप में कहीं बनाया जाए।

यह जान लेना ज़रूरी है कि पहले और दूसरे विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका सहित यूरोपीय मित्र देशों और उनके सहयोगियों ने षड्यंत्र करके ज़बरदस्ती अरब के इलाक़े फ़िलिस्तीन में इस्राइल का निर्माण किया था। लेकिन इस समय यह एक महत्वपूर्ण बात है कि इस्राइल की पैदाइश में जिस ब्रिटेन की अहम भागीदारी थी, उसने इस ईरान-इस्राइल जंग से ख़ुद को न सिर्फ़ अलग किया, बल्कि इस्राइल और उसके सरपरस्त/गार्जियन अमेरिका की आलोचना भी की।

यहां यह बात महत्वपूर्ण है कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने ईरान पर हमलों की न सिर्फ़ निंदा की, बल्कि ट्रम्प की अपील के बावजूद ब्रिटेन को इस जंग में इस्राइल के पक्ष में शामिल होने से इंकार कर दिया। साथ ही उन्होंने डी-एस्केलेशन (De-escalation) की अपील की, जिसका अर्थ है कि हर तरह के संघर्ष, तनाव, हिंसा और आक्रामक स्थिति की तीव्रता को जल्द से जल्द कम किया जाए। इससे पहले ब्रिटेन इस्राइल के ख़िलाफ़ एक और कड़ा क़दम उठा चुका है, उसने इस्राइल के दो मंत्रियों बेन-ग्वीर और स्मोट्रिच के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है।

यह कार्रवाई ब्रिटेन द्वारा कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और नॉर्वे जैसे सहयोगी देशों के साथ मिलकर की गई, जो इस मुद्दे पर एक समन्वित अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई मानी जानी चाहिए। इसमें दोनों नेताओं के यूके में प्रवेश पर रोक लगाने के अलावा उनकी संपत्तियों को फ़्रीज़ करना भी शामिल है। साथ ही उनके वित्तीय लेन-देन पर निगरानी बढ़ा दी गई है।

हालांकि यह प्रतिबंध फ़िलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ हिंसा को लेकर बढ़ती अंतरराष्ट्रीय चिंताओं के मद्देनज़र लगाया गया था, जिसका इस जंग में ब्रिटेन और यूरोपीय देशों के इस्राइल-विरोधी रुख़ के कारण महत्व और बढ़ जाता है। यह क़दम सामान्य कूटनीतिक असहमति से आगे बढ़कर एक औपचारिक प्रतिबंध की श्रेणी में आता है, जो यह गंभीर अंतरराष्ट्रीय संदेश देता है कि इस्राइली सरकार/समाज ने इंसानियत के सबसे बुनियादी तक़ाज़ों को अभी तक अपने तौर-तरीक़ों में शामिल नहीं किया है।

इस कार्रवाई के पीछे फ़िलिस्तीनियों/ग़ाज़ा पर की गई हिंसात्मक कार्रवाइयों को कारण बताया गया। इस प्रतिबंध

को लगाने में ब्रिटेन के लगभग सभी सहयोगी देश शामिल थे। इन प्रतिबंधों के पीछे जो मुख्य कारण बताए गए, उनमें फ़िलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ हिंसा को उकसाने वाले बयान, कट्टरपंथी एवं विभाजनकारी राजनीतिक रुख़ तथा वेस्ट बैंक में बस्तियों को लेकर विवादास्पद नीतियों का समर्थन शामिल है।

मानवाधिकार संगठनों का आरोप है कि इन इस्राइली नेताओं की बयानबाज़ी ने क्षेत्र में तनाव को और भड़काया है। ब्रिटेन और यूरोपीय देशों के इस क़दम की बड़ी अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया हुई है और इसका व्यापक एवं स्थायी प्रभाव पड़ने की संभावना है।

ब्रिटेन का यह क़दम ऐसे समय में आया है, जब संयुक्त राष्ट्र (United Nations) सहित कई वैश्विक संस्थाएं ग़ाज़ा और वेस्ट बैंक की स्थिति को लेकर चिंता जता चुकी हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे इस्राइल की अंतरराष्ट्रीय छवि पर असर पड़ेगा और पश्चिमी देशों तथा इस्राइल के बीच कूटनीतिक तनाव बढ़ेगा।

ब्रिटेन और उसके सहयोगी देशों द्वारा उठाया गया यह क़दम केवल इस्राइल के दो अतिवादी मंत्रियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई नहीं, बल्कि एक व्यापक संदेश है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय अब मानवाधिकार और शांति के मुद्दों पर सख़्त रुख़ अपनाने को तैयार है। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इस फ़ैसले का मध्य-पूर्व की राजनीति और वैश्विक कूटनीति पर क्या दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है।

गांधी जी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को फ़िलिस्तीन में अन्याय का मूल कारण माना, जहां ब्रिटेन ने यहूदियों को अरबों पर थोपने के लिए खाड़ी के देशों पर सैन्य कार्रवाई का सहारा लिया। गांधी जी ने वर्ष 1931 में कहा था कि ज़ायनिज़्म (फ़िलिस्तीन पर यहूदी पुनर्स्थापना) उन्हें आकर्षित नहीं करता, और यहूदियों को ब्रिटिश सहायता के बिना अरबों की सद्भावना से ही बसना चाहिए।

ब्रिटिश नीति की आलोचना करते हुए गांधी जी ने वर्ष 1938 के 'हरिजन' लेख में ब्रिटिश मैंडेट को अनैतिक बताया, क्योंकि "फ़िलिस्तीन अरबों का है, उसी तरह जैसे इंग्लैंड अंग्रेज़ों का।" उन्होंने बाल्फ़ोर घोषणा को युद्ध की सैन्य शक्ति पर आधारित क़रार दिया, जो मानवता के विरुद्ध अपराध है।

ब्रिटेन को 'डिवाइड एंड रूल' नीति का दोषी ठहराते हुए उन्होंने कहा कि यहूदियों का बसना ब्रिटिश निर्णय पर निर्भर है, जो हिंसक और अमानवीय है। वर्ष 1921 में 'डेली हेराल्ड' को दिए बयान में गांधी जी ने सहयोगियों द्वारा फ़िलिस्तीन को यहूदियों को सौंपने को मुसलमानों के साथ विश्वासघात बताया। उनका मानना था कि धार्मिक कार्य बम या बंदूक़ से नहीं हो सकता। वे ब्रिटिश साम्राज्यवाद को भारत और फ़िलिस्तीन दोनों में विभाजनकारी बताते थे और अहिंसा के माध्यम से मूल निवासियों के अधिकारों की रक्षा पर ज़ोर देते थे।

ब्रिटिश नीति की आलोचना करते हुए गांधी जी ने वर्ष 1938 के 'हरिजन' लेख में ब्रिटिश मैंडेट को अनैतिक बताया, क्योंकि "फ़िलिस्तीन अरबों का है, उसी तरह जैसे इंग्लैंड अंग्रेज़ों का।" उन्होंने बाल्फ़ोर घोषणा को युद्ध की सैन्य शक्ति पर आधारित क़रार दिया, जो मानवता के विरुद्ध अपराध है।

ईरान-इस्राइल युद्ध के दौरान स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज़ ने इस्राइल-अमेरिकी हमलों को "अवैध, क्रूर और अमानवीय" कहा है और इन्हें अंतरराष्ट्रीय क़ानूनों का उल्लंघन बताया। उन्होंने अमेरिका को स्पेनिश बेस इस्तेमाल करने की अनुमति देने से इंकार कर दिया और इसे मध्य-पूर्व को अस्थिर करने वाला क़दम बताया।

जबकि ब्रिटेन के कीर स्टार्मर ने इस्राइल का सीधा विरोध नहीं किया, लेकिन ब्रिटेन को युद्ध (और संभवतः हिंसा एवं अन्याय से भी) अलग कर लिया है। चीन ने हमलों पर "गहरी चिंता" जताई और तत्काल युद्धविराम तथा वार्ता की मांग की। फ़्रांस के इमैनुएल मैक्रों ने हमलों में शामिल न होने का बयान दिया और विवादों को वार्ता से हल करने पर ज़ोर दिया। अरब लीग ने इस्राइल-अमेरिकी हमलों को संप्रभुता का उल्लंघन बताया। तुर्की, रूस और ब्राज़ील ने भी इस्राइल के हमलों की निंदा की और क्षेत्रीय युद्ध भड़कने की चेतावनी दी है।

ऐसे में गांधी जी का पक्ष बहुत समीचीन प्रतीत होता है। अब इस्राइल का अस्तित्व तो समाप्त नहीं हो सकता, लेकिन उसे 'ग्रेटर इस्राइल' (अखंड...टाइप) जैसे अव्यावहारिक और उग्र विचारों को त्यागकर अपने पड़ोसियों के साथ शांतिपूर्ण संबंध स्थापित करने चाहिए। ■■

वार्षिक परीक्षा के बाद बचे समय में क्या करें?

❖संपादन प्रभाग

विद्यालयों में पूरे वर्ष पढ़ाई, गृहकार्य, परीक्षाएं और विभिन्न शैक्षिक गतिविधियां चलती रहती हैं। विशेष रूप से वार्षिक परीक्षाओं के समय बच्चों को काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है। परीक्षा समाप्त होने के बाद बच्चों को कुछ समय के लिए पढ़ाई से छुट्टी मिल जाती है। यह समय बच्चों के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह उन्हें आराम करने, नई चीज़ें सीखने और अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का अवसर देता है। यदि इस ख़ाली समय का सही तरीक़े से उपयोग किया जाए तो बच्चे अपने जीवन में कई सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। लेकिन यदि यह समय बिना किसी योजना के केवल मोबाइल, टीवी या आलस्य में व्यतीत कर दिया जाए तो यह समय व्यर्थ चला जाता है। इसलिए आवश्यक है कि बच्चे वार्षिक परीक्षा के बाद मिले अवकाश का सदुपयोग करें।



सबसे पहले बच्चों को इस समय का उपयोग अच्छी पुस्तकों के अध्ययन में करना चाहिए। पाठ्य-पुस्तकों के अलावा भी अनेक प्रकार की पुस्तकें होती हैं जो ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक होती हैं। जैसे कहानी की पुस्तकें, महान व्यक्तियों की जीवनियां, विज्ञान से जुड़ी रोचक पुस्तकें, सामान्य ज्ञान की पुस्तकें आदि। इन पुस्तकों को पढ़ने से बच्चों की सोचने की क्षमता बढ़ती है और उनका ज्ञान भी व्यापक होता है। महान लोगों की जीवनियां पढ़ने से बच्चों को प्रेरणा मिलती है कि कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत और लगन से सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार पुस्तकें बच्चों के जीवन को सही दिशा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है नए-नए कौशल सीखना। आज के समय में केवल किताबों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विभिन्न प्रकार के कौशल भी जीवन में आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक होते हैं। अवकाश के समय में बच्चे, हस्तकला, सिलाई, बाग़वानी, कम्प्यूटर, टाइपिंग या कोई नई भाषा सीख सकते हैं। ये सभी कौशल बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाते हैं और उनके आत्मविश्वास को भी मज़बूत बनाते हैं। कई बार बच्चे पढ़ाई के दौरान इन गतिविधियों के लिए समय नहीं निकाल पाते, इसलिए परीक्षा के बाद का समय इन्हें सीखने का अच्छा अवसर होता है।

खेलकूद और शारीरिक व्यायाम भी बच्चों के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। पढ़ाई के साथ-साथ स्वस्थ शरीर का होना भी आवश्यक है। अवकाश के समय में बच्चों को विभिन्न खेलों में भाग लेना चाहिए, जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, बैडमिंटन, दौड़ या योग और व्यायाम। खेलकूद से शरीर मज़बूत बनता है, मन प्रसन्न रहता है और बच्चों में टीम भावना तथा अनुशासन का विकास होता है। नियमित

खेलकूद से बच्चों की ऊर्जा सही दिशा में लगती है और वे अधिक सक्रिय तथा स्वस्थ बनते हैं।

आज के आधुनिक समय में तकनीकी ज्ञान भी बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। बच्चे अवकाश के समय में कम्प्यूटर का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। वे टाइपिंग सीख सकते हैं, पेंटिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकते हैं या इंटरनेट के माध्यम से शैक्षिक वीडियो देखकर नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि इस दौरान यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चे तकनीक का उपयोग केवल सीखने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए करें, न कि अत्यधिक समय मोबाइल या वीडियो गेम में व्यर्थ करें।

वार्षिक परीक्षा के बाद का समय बच्चों को परिवार के साथ समय बिताने का भी अवसर देता है। पूरे वर्ष पढ़ाई के कारण बच्चे कई बार अपने परिवार के साथ पर्याप्त समय नहीं बिता पाते। इस अवकाश में वे अपने माता-पिता, दादा-दादी और अन्य परिवार के सदस्यों के साथ समय बिता सकते हैं। उनसे बातचीत कर सकते हैं, उनके अनुभवों से सीख सकते हैं और घर के छोटे-मोटे कामों में हाथ बंटा सकते हैं। इससे बच्चों में ज़िम्मेदारी की भावना विकसित होती है और परिवार के साथ उनके संबंध भी मज़बूत होते हैं। इसके अलावा बच्चे इस समय का उपयोग समाज सेवा के कार्यों में भी कर सकते हैं। वे अपने आसपास के छोटे बच्चों को पढ़ा सकते हैं, स्वच्छता अभियान में भाग ले सकते हैं, पौधे लगा सकते हैं या पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी गतिविधियों में हिस्सा ले सकते हैं। इस प्रकार के कार्य बच्चों में सामाजिक जागरूकता और सेवा की भावना पैदा करते हैं। वे यह समझते हैं कि समाज के लिए कुछ करना भी हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए।

अवकाश के समय में बच्चे प्रकृति के साथ समय बिताना भी सीख सकते हैं। आजकल शहरों में रहने वाले बच्चों का प्रकृति से संपर्क कम होता जा रहा है। यदि बच्चे पार्क में जाएं, पेड़-पौधों के बीच समय बिताएं, पक्षियों को देखें या बाग़वानी करें तो इससे उन्हें प्रकृति के प्रति प्रेम और संवेदनशीलता विकसित होती है। बाग़वानी करना भी एक बहुत अच्छा शौक़ हो सकता है। बच्चे अपने घर में छोटे-छोटे पौधे लगा सकते हैं और उनकी देखभाल कर सकते हैं। इससे उन्हें धैर्य और ज़िम्मेदारी का पाठ भी मिलता है।

इस समय का उपयोग बच्चे स्वयं के व्यक्तित्व विकास के लिए भी कर सकते हैं। वे अपनी बोलने की कला को सुधारने के लिए भाषण का अभ्यास कर सकते हैं, लेखन का अभ्यास कर सकते हैं या डायरी लिखने की आदत डाल सकते हैं। डायरी लिखने से बच्चे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना सीखते हैं और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इसके अलावा वे समय प्रबंधन की आदत भी सीख सकते हैं, जो जीवन में बहुत उपयोगी सिद्ध होती है।

बच्चों को इस समय का उपयोग अगली कक्षा की हल्की-फुल्की तैयारी के लिए भी करना चाहिए। यदि वे नई कक्षा की कुछ पुस्तकें पढ़ लें या विषयों की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त कर लें, तो नए सत्र की पढ़ाई उन्हें अधिक सरल लगेगी। इससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और वे शुरुआत से ही पढ़ाई में आगे रह पाएंगे। हालांकि इस दौरान बच्चों पर पढ़ाई का अधिक दबाव नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे रुचि और जिज्ञासा के साथ करना चाहिए।

इसके साथ ही बच्चों को रचनात्मक गतिविधियों में भी भाग लेना चाहिए। जैसे चित्र बनाना, कविता लिखना, कहानी लिखना, मॉडल बनाना, विज्ञान प्रयोग करना आदि। ये गतिविधियां बच्चों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता को बढ़ाती हैं। कई बार बच्चों में छिपी प्रतिभा इन्हीं गतिविधियों के माध्यम से सामने आती है। इसलिए माता-पिता और शिक्षकों को भी बच्चों को ऐसे कार्यों के लिए प्रेरित करना चाहिए। एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों को समय का सही प्रबंधन करना सीखना चाहिए। अवकाश का अर्थ यह नहीं है कि पूरा दिन बिना किसी योजना के बिताया जाए। यदि बच्चे एक छोटा-सा दैनिक कार्यक्रम बना लें, जिसमें पढ़ाई, खेल, रचनात्मक गतिविधियां और विश्राम का संतुलन हो, तो उनका समय अधिक उपयोगी और आनंददायक बन सकता है।

वस्तुतः कहा जा सकता है कि वार्षिक परीक्षा के बाद का समय बच्चों के लिए केवल आराम करने का समय नहीं होता, बल्कि यह नए अनुभव प्राप्त करने और स्वयं को बेहतर बनाने का अवसर होता है। यदि बच्चे इस समय का उपयोग ज्ञान प्राप्त करने, नई कौशल सीखने, खेलकूद, समाज सेवा और रचनात्मक गतिविधियों में करें, तो उनका सर्वांगीण विकास संभव है। इससे वे न केवल एक अच्छे विद्यार्थी बनते हैं, बल्कि एक अच्छे और ज़िम्मेदार नागरिक भी बनते हैं।

इसलिए आवश्यक है कि बच्चे, अभिभावक और

शिक्षक सभी मिलकर यह सुनिश्चित करें कि वार्षिक परीक्षा के बाद मिला अवकाश बच्चों के लिए सीखने, विकास करने और जीवन को समृद्ध बनाने का समय बने। सही मार्गदर्शन और सकारात्मक सोच के साथ यह समय बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

वार्षिक परीक्षा के बाद इस प्रकार करें

समय का सदुपयोग

• अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना
(कहानी, जीवनियां, विज्ञान, सामान्य ज्ञान आदि)

• नए कौशल सीखना
(हस्तकला, सिलाई, बाग़वानी, कम्प्यूटर, टाइपिंग, नई भाषा आदि)

• खेलकूद और शारीरिक व्यायाम करना
(क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, बैडमिंटन, योग, दौड़ आदि)

• तकनीकी ज्ञान प्राप्त करना
(कम्प्यूटर सीखना, शैक्षिक वीडियो देखना, पेंटिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग)

• परिवार के साथ समय बिताना
(बातचीत करना, अनुभवों से सीखना, घर के कामों में सहयोग देना)

• समाज सेवा के कार्य करना
(छोटे बच्चों को पढ़ाना, स्वच्छता अभियान, पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण)

• प्रकृति के साथ समय बिताना
(पार्क जाना, पेड़-पौधों की देखभाल, पक्षियों को देखना, बाग़वानी करना)

• व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देना
(भाषण अभ्यास, लेखन, डायरी लिखना, आत्मविश्वास बढ़ाना)

• समय प्रबंधन सीखना
(दैनिक कार्यक्रम बनाना और उसका पालन करना)

• अगली कक्षा की हल्की तैयारी करना
(नई किताबें पढ़ना, विषयों की प्रारंभिक जानकारी लेना)

• रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेना
(चित्रकला, कविता, कहानी लेखन, मॉडल बनाना, विज्ञान प्रयोग) ■■

ग़ज़ल

• ज़हीर ललितपुरी •

अभी नसीब में अज्रो-सवाब[1] बाक़ी है
तेरी हयात[2] का अब भी हिसाब बाक़ी है

अगर गिलास है ख़ाली तो किस लिए तौबा[3]
सुराही फोड़िये जिसमें शराब बाक़ी है

नशा नशा है निगाहों का हो कि अंगूरी
तबाहकुन[4] है अगर कुछ शराब बाक़ी है

नज़र मिला के न तौहीन[5] कीजिए इसकी
हमारे दरमियां अब भी हिजाब[6] बाक़ी है

गुनाह कर के तू बेफ़िक्र हो गया कैसे
तुझे पता है कि इसका अज़ाब[7] बाक़ी है

समाज उसकी वजह से सुधर नहीं पाता
शरीफ़ लोगों में ख़ाना ख़राब[8] बाक़ी है

हर इक क़दम पे कोई इम्तिहान है सिर पर
ज़हीर कोई न कोई निसाब[9] बाक़ी है।

कठिन शब्द : 1. नेक कामों का अच्छा इनाम 2. ज़िन्दगी 3. पश्चाताप के बाद हमेशा के लिए बुरे काम छोड़ने का पक्का इरादा, बुराई से अच्छाई की ओर वापसी 4. तबाही की वजह 5. अपमान 6. पर्दा, 7. सज़ा 8. आवारा, बर्बाद, बिगड़ैल इंसान 9. कोर्स, पाठ्यक्रम

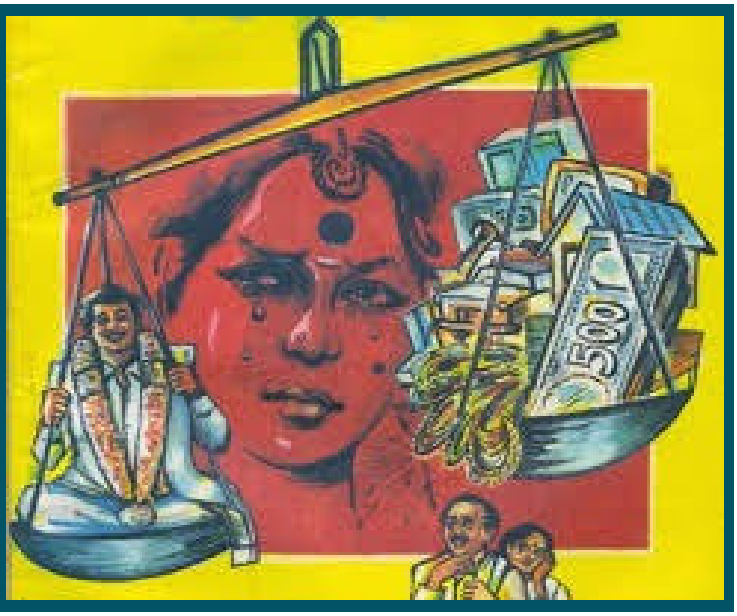
अतः सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए
है जो आकाशों का रब और धरती का
रब, सारे संसार का रब है।
आकाशों और धरती में बड़ाई उसी के
लिए है, और वही प्रभुत्वशाली, अत्यन्त
तत्वदर्शी है।
(क़ुरआन, 45:36, 37)



with best
compliment
from

Aqeel Ahmad Siddique
Balaghat (M.P.)

दहेज का दंश



❖संपादन प्रभाग

किसी भी समाज की सच्ची पहचान उसकी आर्थिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसकी संवेदनशीलता और न्यायबोध से होती है। विवाह जैसी संस्था, जिसे जीवन का सबसे पवित्र और मानवीय संबंध माना गया है, जब लेन-देन और सौदेबाज़ी का माध्यम बन जाती है, तब यह केवल एक सामाजिक समस्या नहीं रह जाती, बल्कि पूरे समाज के नैतिक पतन का संकेत बन जाती है। दहेज प्रथा इसी पतन की एक भयावह अभिव्यक्ति है, जो वर्षों से हमारे समाज के भीतर जड़ें जमाए हुए है और समय के साथ ख़त्म होने के बजाय नए रूपों में और अधिक क्रूर होती जा रही है। यह एक ऐसा दंश है, जो हर साल हज़ारों परिवारों को भीतर तक तोड़ देता है।

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि देश में सख़्त क़ानूनी प्रावधानों के बावजूद दहेज के लिए विवाहिता की हत्या या उसे आत्महत्या के लिए मजबूर करने की घटनाओं का सिलसिला थम नहीं रहा है। इक्कीसवीं सदी में शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में नए आयाम हासिल करने के बावजूद इस मामले में समाज के एक हिस्से की रूढ़िवादी मानसिकता नहीं बदली है। यही नहीं, क़ानूनों को सख़्ती से लागू करने के मामले में भी विभिन्न स्तरों पर लापरवाही देखी जाती है, जिस कारण इस कुप्रथा की जड़ें नष्ट होने के बजाय गहरी होती जा रही हैं। इसका दंश महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा और उत्पीड़न तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी जान पर भी भारी पड़ रहा है।

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपने एक फ़ैसले में इस पर गहरी चिंता जतायी और दहेज के मामलों में महिलाओं की मौत की घटनाओं को समाज पर गहरा धब्बा क़रार दिया। शीर्ष अदालत की यह टिप्पणी केवल एक क़ानूनी अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उस सच्चाई का स्वीकार है जिसे समाज अक्सर नज़रअंदाज़ कर देता है। अदालत ने स्पष्ट कहा कि इस सामाजिक कुरीति के कारण आज भी हज़ारों महिलाएं बेमौत मारी जाती हैं। यह बयान अपने आप में यह दर्शाता है कि समस्या कितनी गंभीर और व्यापक है।

सरकारी स्तर पर देश में दहेज प्रथा पर अंकुश लगाने के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं, लेकिन आंकड़ों से पता चलता है कि इसकी वास्तविक तस्वीर बेहद चिंताजनक है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की एक रिपोर्ट के मुताबिक़, वर्ष 2023 में दहेज संबंधी अपराधों के तहत दर्ज मामलों में चौदह प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। देश भर में इससे संबंधित पंद्रह हज़ार से अधिक मामले सामने आए, जिनमें छह हज़ार से ज़्यादा महिलाओं की मौत हो गई। पिछले वर्षों के आंकड़ों पर नज़र डालें तो वर्ष 2022 और 2021 में भी यह संख्या क्रमशः 13,479 और 13,568 रही थी। इन आंकड़ों का लगातार बने रहना और बढ़ना यह बताता है कि समस्या

केवल बनी हुई ही नहीं है, बल्कि और गहरी होती जा रही है।

ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि आख़िर इस तरह की घटनाओं पर रोक क्यों नहीं लग पा रही है? क्या वजह है कि दहेज प्रथा को बढ़ावा देने वालों में क़ानून का ज़रा भी ख़ौफ़ नहीं है? इसका एक बड़ा कारण क़ानून प्रवर्तन एजेंसियों का ढुलमुल रवैया भी है। कई मामलों में पुलिस की लापरवाही के चलते जांच कमज़ोर रह जाती है और अदालत में पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत नहीं हो पाते, जिसके परिणामस्वरूप आरोपी बरी हो जाते हैं। इससे न केवल पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिल पाता, बल्कि समाज में यह संदेश भी जाता है कि ऐसे अपराधों के बाद भी बच निकलना संभव है।

इसके अतिरिक्त, कई बार पीड़ित महिलाओं को शिकायत दर्ज कराने में ही भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। थानों में उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया जाता या उन्हें समझौते के लिए दबाव डाला जाता है। यह स्थिति पुलिस व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती है और यह भी दर्शाती है कि क़ानून की सख़्ती केवल काग़ज़ों तक सीमित रह जाती है। जब शुरुआती स्तर पर ही पीड़िता को न्याय की उम्मीद नहीं मिलती, तो वह या उसका परिवार आगे की क़ानूनी प्रक्रिया से पीछे हट जाता है।

दहेज प्रथा केवल सामाजिक बुराई ही नहीं, बल्कि मानवाधिकारों और गरिमा का भी गंभीर उल्लंघन है। एक महिला, जो अपने घर को छोड़कर नए जीवन की शुरुआत करती है, यदि उसी घर में उसे अपमान, हिंसा और प्रताड़ना का सामना करना पड़े, तो यह केवल एक व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं, बल्कि पूरे समाज के मूल्यों की विफलता है। कई मामलों में पीड़ित महिलाओं के परिजन क़ानूनी जागरूकता की कमी और सामाजिक दबाव के कारण पुलिस में शिकायत तक दर्ज नहीं करा पाते। 'लोग क्या कहेंगे' की मानसिकता आज भी न्याय की राह में सबसे बड़ी बाधा बनी हुई है।

दहेज की मांग केवल आर्थिक लालच का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उस मानसिकता का प्रतीक है जिसमें विवाह को एक लेन-देन के रूप में देखा जाता है। जब तक यह सोच बनी रहेगी, तब तक किसी भी क़ानून या सज़ा का डर इस कुप्रथा को पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाएगा।

इस समस्या के समाधान के लिए सबसे पहले शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाना होगा। पुलिस और प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पीड़ित महिलाओं की शिकायत को तुरंत दर्ज किया जाए और उसकी निष्पक्ष जांच हो। इसके साथ ही, ऐसे मामलों की सुनवाई त्वरित अदालतों में की जानी चाहिए, ताकि पीड़ित पक्ष को जल्द न्याय मिल सके और आरोपी को सज़ा मिलने में अनावश्यक देरी न हो।

सामाजिक स्तर पर भी व्यापक जागरूकता की आवश्यकता है। केवल क़ानून के डर से नहीं, बल्कि नैतिक ज़िम्मेदारी के रूप में दहेज का विरोध किया जाना चाहिए। समाज के हर वर्ग को यह समझना होगा कि दहेज लेना और देना दोनों ही ग़लत हैं। विवाह को सादगी और समानता के आधार पर संपन्न करने की परंपरा को बढ़ावा देना होगा।

महिलाओं को शिक्षित और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम है। जब महिलाएं आत्मनिर्भर होंगी, तो वे अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होंगी और किसी भी प्रकार के अन्याय के ख़िलाफ़ खड़ी हो सकेंगी। इसके साथ ही, बेटियों को लेकर समाज के दृष्टिकोण में भी बदलाव लाना होगा। उन्हें बोझ नहीं, बल्कि समान अधिकारों और अवसरों के साथ एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करना होगा। परिवारों की भूमिका भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि माता-पिता अपने बेटों को यह सिखाएं कि दहेज लेना अपमानजनक और अनैतिक है, तो आने वाली पीढ़ी में इस कुप्रथा के लिए कोई स्थान नहीं बचेगा। समाज में ऐसे उदाहरणों को सम्मान दिया जाना चाहिए, जहां बिना दहेज के विवाह संपन्न होते हैं।

अंततः, यह स्पष्ट है कि केवल क़ानूनी सख़्ती इस समस्या का पूर्ण समाधान नहीं है। जब तक समाज की सोच में बदलाव नहीं आएगा, तब तक दहेज जैसी कुरीतियां किसी न किसी रूप में बनी रहेंगी। यह एक सामूहिक ज़िम्मेदारी है, जिसे क़ानून, प्रशासन और समाज—तीनों को मिलकर निभाना होगा।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि दहेज का दंश केवल एक सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक संवेदनहीनता का परिणाम है। यदि हम सच में एक बेहतर और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें इस कुप्रथा के ख़िलाफ़ केवल शब्दों में नहीं, बल्कि व्यवहार में भी कठोर रुख़ अपनाना होगा। जब तक हर व्यक्ति यह संकल्प नहीं लेता कि वह दहेज न देगा, न लेगा, तब तक इस समस्या का अंत संभव नहीं है। ■■

उत्तराखंड में मुसलमान : भाग - 2

❖इस्लाम हुसैन

उत्तराखंड के कई स्थानों—गांवों, शहरों, जंगलों और पुराने जंगल के रास्तों तथा उनके मुहानों पर कालू सय्यद बाबा और उनके जैसे सूफ़ियों के नाम पर मज़ारें/स्थान/आस्ताने और चौकियां हैं। इनके बारे में खोजबीन करने पर पता चलता है कि ये आज के नहीं हैं, बल्कि सल्तनत काल से लेकर ब्रिटिश काल तक बनते रहे हैं। यह कोई आज की बात नहीं, बल्कि सदियों पुरानी परंपरा है।

गढ़वाली क्षेत्र में सूफ़ी फ़क़ीरों की मौजूदगी और उनकी शिक्षाओं का इतना प्रभाव पड़ा कि जागर-गायन में सय्यद फ़क़ीरों की वाणी "सैदली जागर" के रूप में गढ़वाली समाज में स्वीकार कर ली गई।

इनका उल्लेख अनेक ऐतिहासिक संदर्भों में दर्ज है। यह सब ज़िला गज़ेटियरों के अलावा अनेक ब्रिटिश और भारतीय लेखकों की घुमक्कड़ी पर आधारित किताबों में शामिल है। राहुल सांकृत्यायन की "कुमाऊं का इतिहास" में भी इसका उल्लेख मिलता है।

इसलिए कालू सय्यद बाबा और सूफ़ी सय्यदों को किसी एक सदी या काल में बांधना कठिन है। अधिकांश स्रोतों में उन्हें मुस्लिम फ़क़ीर/सय्यद सूफ़ी/साईं बाबा कहा गया है, जो रास्तों के जानकार, पथ-प्रदर्शक, जंगलों के संरक्षक और पीर बाबा के रूप में जाने जाते थे।

उत्तराखंड में आए सैकड़ों सूफ़ियों में एक प्रसिद्ध नाम कालू सय्यद का है। इन्हें मुस्लिम सूफ़ी परंपरा में हज़रत सय्यद कमालुद्दीन शाह बाबा कहा जाता है और उनका संबंध चिश्ती सिलसिले से जोड़ा जाता है, जिसके महान पीर अजमेर के हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती हैं।

ऐसा माना जाता है कि भारत में मुसलमानों का प्रभाव सूफ़ियों के आगमन से बढ़ा। उत्तर भारत में सूफ़ी परंपरा जिन हस्तियों के कारण आगे बढ़ी, उनमें अजमेर के ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती प्रमुख हैं, जिनके सालाना उर्स में भारत के प्रधानमंत्री की ओर से भी चादरपोशी की जाती है। चिश्ती सिलसिले के सूफ़ी सय्यद होने के कारण उन्हें पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) की नस्ल से जुड़ा माना जाता है।

उत्तराखंड और हिमालय में आने वाले सूफ़ी और पीर बाबा भी उसी परंपरा की कड़ी हैं। माना जाता है कि हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य हज़रत बख़्तियार काकी, उनके शिष्य हज़रत बाबा फ़रीद, उनके शिष्य हज़रत अलाउद्दीन मख़्दूम साबिर पाक (कलियर, रुड़की) और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया (दिल्ली) के दौर (12वीं–14वीं सदी) में उनकी शिष्य परंपरा के अनेक सूफ़ी पूरे हिंदुस्तान में फैल गए।

दिल्ली से उत्तर भारत और हिमालय की ओर जाने वाले सूफ़ियों के क़ाफ़िले जहां-जहां ठहरते थे, वहां उनके निशान आज भी मिलते हैं। उनमें एक प्रसिद्ध स्थान मुरादाबाद का हसनपुर भी है, जहां आज भी सूफ़ियों के निशान और मज़ारें मौजूद हैं।

सूफ़ी परंपराओं के अनुसार, एक बार 40 सूफ़ियों का जत्था अजमेर, दिल्ली और कलियर-रुड़की की दरगाहों से होकर हिमालय की ओर गया, जिसमें हज़रत सय्यद कमालुद्दीन बाबा उर्फ़ कालू सय्यद बाबा भी शामिल थे।

"कालू" नाम लोक परंपरा में श्याम वर्ण, वनवासी या तपस्वी के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।

हिमालय/उत्तराखंड में कालू सय्यद बाबा के नाम से बैठकें, चौकियां, मक़ाम और स्थान (थान) अनेक इलाक़ों—जंगलों, दर्रों, नदियों और व्यापारिक मार्गों पर मिलते हैं। इनके अलावा अन्य पीर बाबा, मलंग, कलंदर, मदारी और जोगी बाबाओं के स्थान भी जंगलों के मुहानों पर पाए जाते हैं।

यह सिलसिला दिल्ली सल्तनत और बाद में मुग़ल काल में भी जारी रहा। फ़क़ीर, सूफ़ी और सय्यद तराई-भाबर के रास्ते कुमाऊं पहुंचे और उन्हें जंगलों तथा व्यापारिक मार्गों का संरक्षक माना गया। इन मार्गों से तिब्बत से नमक, सुहागा (बोरैक्स), ऊन, जड़ी-बूटियां और लकड़ी आती थीं, जबकि तराई से पहाड़ों को आवश्यक वस्तुएं भेजी जाती थीं।

ये पीर बाबा मार्गों की सुरक्षा और सामाजिक निगरानी के केंद्र बन गए। कोटद्वार के जंगलों से लेकर रानीखेत और

अल्मोड़ा तक इनके निशान मिलते हैं।

राहुल सांकृत्यायन ने अपनी पुस्तक "कुमाऊं का इतिहास" और यात्रा-वृत्तांतों में स्पष्ट लिखा है कि कुमाऊं में कई मुस्लिम फ़क़ीरों और पीरों की क़ब्रें हैं, जिन्हें स्थानीय हिंदू समाज भी सिद्ध पुरुष मानता है। जंगल काटने, रास्ता बनाने, नई बस्ती बसाने या किसी उत्सव से पहले इन पीरों को याद किया जाता था और उनके स्थानों पर भेंट चढ़ाई जाती थी। हिंदू समुदाय मंगलवार को और मुस्लिम समुदाय जुमेरात (वृहस्पतिवार) को भेंट चढ़ाता था।

नैनीताल, उधम सिंह नगर, रानीखेत, अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ के जंगल क्षेत्रों में कई स्थानों पर कच्ची-पक्की मज़ारें, क़ब्रें या पेड़ों के नीचे बने चबूतरे "बाबा का थान" के रूप में आज भी मौजूद हैं।

ये सभी स्थान सूफ़ी परंपरा और स्थानीय वन-देवता परंपरा के संगम के उदाहरण हैं। यह उत्तराखंड में इस्लामी उपस्थिति के ग़ैर-राजनीतिक इतिहास का प्रमाण हैं और लोकधर्म तथा सूफ़ी परंपरा के मिलन की मिसाल हैं।

आज भी अनेक स्थानों पर हिंदू और मुसलमान दोनों चादर चढ़ाते हैं। लोक-उत्सवों से पहले बाबा को याद किया जाता है और नई ज़मीन जोतने या लकड़ी काटने से पहले "बाबा नाराज़ न हों" की भावना प्रकट की जाती है।

यह परंपरा बताती है कि कालू सय्यद बाबा धार्मिक प्रचारक नहीं, बल्कि लोक-संरक्षक थे। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि मुसलमानों का आगमन यहां शासन के माध्यम से नहीं, बल्कि यात्रा, सेवा और व्यापारिक मार्गों के संरक्षण के रूप में हुआ।

राहुल सांकृत्यायन के अनुसार, "जो लोग पहाड़ों के पुराने रास्तों को जानते हैं, वे जानते हैं कि इन मार्गों पर साधुओं, फ़कीरों और वनवासियों का प्रभाव किसी राजा से कम नहीं था। इन फ़क़ीरों की क़ब्रें आज भी उन रास्तों की पहचान हैं।"

गढ़वाल में "सैदली जागर" के रूप में सूफ़ी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। सूफ़ियों ने इंसानियत, समानता और भाईचारे का संदेश दिया। चिश्ती परंपरा के सूफ़ियों ने लंगर और सामूहिक भोजन की परंपरा को बढ़ावा दिया, जिसे बाद में सिख गुरुओं ने संगठित रूप दिया।

ऐसा माना जाता है कि सूफ़ियों ने जड़ी-बूटियों के साथ "दम-दरूद" (मंत्र/फूंक) के माध्यम से उपचार किया, जो आगे चलकर जागर परंपरा का हिस्सा बन गया।

लोक कलाकार केशव अनुरागी ने सैदली जागर को लोकप्रिय बनाया। इतिहासकार प्रोफ़ेसर विजय बहुगुणा और लेखक नवीन जोशी ने भी इस परंपरा का उल्लेख किया है।

सैदली जागर में "सय्यद" शब्द का परिवर्तित रूप दिखाई देता है। इसमें बीबी फ़ातिमा, क़ुरआन और अन्य इस्लामी प्रतीकों का उल्लेख मिलता है।

जोगी परंपरा और सूफ़ी प्रभाव

हिमालयी क्षेत्र में सूफ़ियों के साथ-साथ गुरु गोरखनाथ की जोगी परंपरा का भी गहरा प्रभाव रहा। इन जोगियों में कई मुस्लिम फ़क़ीर भी शामिल थे, जो गीत-संगीत, साधना, जड़ी-बूटी उपचार और लोक-जीवन से जुड़े कार्य करते थे।

समय के साथ जब सड़क मार्ग विकसित हुए, तो पैदल यात्राएं कम हो गईं और इन मार्गों पर स्थित सूफ़ी और जोगी स्थलों का महत्व धीरे-धीरे कम होता गया। कई स्थान स्थानीय आस्था केंद्रों में परिवर्तित हो गए।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिमालयी क्षेत्र में जो मज़ारें और धार्मिक स्थल दिखाई देते हैं, उनमें केवल सूफ़ी फ़क़ीरों की क़ब्रें ही नहीं, बल्कि जोगियों और संतों की परिवर्तित समाधियां भी शामिल हो सकती हैं। ये स्थल कभी सांस्कृतिक संवाद, सह-अस्तित्व और लोक-शिक्षा के केंद्र थे। ■■

लेखक के बारे में

मान्यता-प्राप्त पत्रकार, लेखक और शायर, 72 वर्षीय इस्लाम हुसैन साहब का जन्म उनके ननिहाल रानीखेत में हुआ। उनके दादा गोरखा राइफ़ल्स में फ़ौजी थे, जबकि नाना कुमाऊं रेजीमेंट में सिविल सेवा में कार्यरत थे। वे 1975 से लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। हिन्दी, उर्दू और अंग्रेज़ी के राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दैनिक और साप्ताहिक समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में उनके अनेक लेख, फ़ीचर रिपोर्ट, कहानियां और शायरी प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी चार पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कई रिपोर्ट्स को शोधकर्ताओं ने अपने शोध में सम्मिलित किया है। उनके सामाजिक कार्यों पर भी शोध कार्य हुए हैं, और कुमाऊं विश्वविद्यालय के एक शोधार्थी को इस विषय पर पीएचडी प्राप्त हो चुकी है।



❖सलमान अहमद

दुनिया भर में बढ़ती असमानता, भूख और वित्तीय असुरक्षा के बीच 'ज़कात' धन के पुनर्वितरण की एक संरचित (structured) और आस्था-आधारित अनिवार्य प्रणाली है। स्वैच्छिक परोपकारिता के विपरीत, ज़कात अपने योग्य धन का लगभग 2.5% अनिवार्य हिस्सा है, जो सक्षम मुसलमान हर साल कुछ विशिष्ट श्रेणियों के लाभार्थियों ख़ासकर ग़रीब और कमज़ोर लोगों को देते हैं। इस्लामिक इकोनॉमिक रिसर्च इंस्टीट्यूशन और स्टैंडिंग कमेटी फॉर इकोनॉमिक एंड कमर्शियल कोऑपरेशन (COMCEC) जैसे फ़ोरम पर पेश किए गए पॉलिसी पेपर्स के अनुसार, अगर पूरी तरह और अच्छे से इकट्ठा किया जाए तो दुनिया भर में ज़कात जमा होने का अनुमान है कि यह सालाना US $200 अरब से US $1 खरब के बीच होगा। यहां तक कि कम-से-कम अनुमान भी बताते हैं कि हर साल औपचारिक और अनौपचारिक ज़कात चैनलों के ज़रिए सैकड़ों अरबों डॉलर सर्कुलेट होते हैं, जिससे यह दुनिया की सबसे बड़े धर्म-आधारित पुनर्वितरण प्रणाली में से एक बन जाती है।

संगठित ज़कात का मानवीय प्रभाव तेज़ी से दिख रहा है। यूनाइटेड नेशंस हाई कमिश्नर फॉर रिफ्यूजीज़ (UNHCR) के मुताबिक़ उसके रिफ्यूजी ज़कात फंड ने विगत वर्षों में प्रत्येक वर्ष लाखों डॉलर इकट्ठा किए हैं जिससे कई देशों में दस लाख से ज़्यादा बेघर और कमज़ोर लोगों को मदद मिली है। इन फंड्स का इस्तेमाल इमरजेंसी राहत, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य-देखभाल, आश्रय और क़र्ज़ से राहत के लिए किया जाता है। ऐसे संस्थागत उदाहरण दिखाते हैं कि ज़कात प्रबंधन जब पारदर्शी तरीक़े से किए जाते हैं तो वैश्विक विकास और मानवीय मक़सदों के साथ कितने क़रीब से जुड़ते हैं।

भारत में हालांकि ज़कात के लिए कोई केंद्रीकृत राष्ट्रीय रिपोर्टिंग तंत्र नहीं है, लेकिन सामुदायिक सर्वेक्षण और मीडिया के अनुमान बताते हैं कि ज़कात के लिए हर साल काफ़ी योगदान दिया जाता है। द इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक़, भारत में ज़कात का योगदान हर साल ₹7,500 करोड़ से ₹40,000 करोड़ के बीच होने का अनुमान है, जो

इसके तरीक़े और दायरे पर निर्भर करता है। निचले स्तर पर भी यह ग़रीबी हटाने, शैक्षिक छात्रवृत्ति, चिकित्सा सहायता, छोटे बिज़नेस को समर्थन और मुश्किल में फंसे परिवारों के लिए क़र्ज़ चुकाने की तरफ़ जाने वाले संसाधन का एक बड़ा प्रवाह दिखाता है। ख़ास बात यह है कि यह रक़म अपनी मर्ज़ी से दी जाने वाली चैरिटी (सदक़ा), आपदा राहत के लिए फंड इकट्ठा करने और मुस्लिम लोगों और संस्थाओं द्वारा नियमित किए जाने वाले भलाई के कामों के अलावा है।

जब दुनिया भर में बड़े परोपकारी कामों या कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम से तुलना की जाती है, तो ज़कात की एक ख़ास ताक़त होती है—यह ज़रूरी है, बार-बार किया जाता है, और समुदाय से जुड़ा है। एकबारगी दान या अनुदान चक्र के विपरीत ज़कात को हर साल फिर से हिसाब लगाया और बांटा जाता है, ताकि सहयोग मिलता रहे।

वर्ल्ड बैंक के अनुसार, ऐसी दुनिया में जहां करोड़ों लोग अभी भी बहुत ज़्यादा ग़रीबी में जी रहे हैं पुनर्वितरण का ऐसा लगातार और मूल्य-आधारित सिस्टम एक ज़रूरी अनुपूरक रोल निभाता है। ये योगदान दिखाते हैं कि ज़कात सिर्फ़ एक धार्मिक रस्म नहीं है बल्कि एक बहुत असरदार सामाजिक-आर्थिक ज़रिया है जो दुनिया भर और भारत में चल रही आर्थिक मुश्किलों के बीच ज़िंदगी को बेहतर बनाता है और इज़्ज़त को मज़बूत करता है।

धन का बहाव (Circulation of Money)

ज़कात असल में एक ऐसी व्यवस्था है जो पैसे के जमा होने के बजाय उसके सर्कुलेशन को पक्का करता है। ऐसे समय में जब वर्ल्ड बैंक और ग्लोबल इनइक्वालिटी स्टडीज़ के अनुसार, दौलत तेज़ी से आबादी के एक छोटे से हिस्से के हाथों में जमा हो रही है। ज़कात एक सुधारात्मक तंत्र के तौर पर काम करता है। यह आवश्यक मानकर कि हर साल योग्य अप्रयुक्त धन का 2.5% पुनर्वितरित किया जाए, यह पूंजी के ठहराव को रोकता है और संसाधन को उपभोग, सूक्ष्म उद्यम, क़र्ज़ मुक्त और बुनियादी ज़रूरतों की ओर पुन: निर्देशित करता है। आर्थिक तौर पर, यह ज़मीनी स्तर पर मांग और लोकल प्रोडक्टिविटी को बढ़ाता है। बढ़ती आय के अंतर से जूझ रहे समाजों में यह मॉडल एक टिकाऊ और बार-बार बांटने वाला फ्रेमवर्क देता है जो पॉलिसी की मजबूरी में नहीं, बल्कि नैतिक विश्वास पर आधारित होता है।

आर्थिक असमानता को कम करने का एक सीधा उपाय

अमूर्त आर्थिक सिद्धांत के विपरीत ज़कात सीधे तौर पर असमानता को लक्षित करता है। क़ुरआन (9:60) में लाभार्थियों की आठ कैटेगरी साफ़ तौर पर बताई गई हैं, जिससे यह पक्का होता है कि फंड ग़रीबों, क़र्ज़दारों और दूसरे कमज़ोर ग्रुप्स तक पहुंचे। ग्लोबल डेवलपमेंट रिपोर्ट के अनुसार, ऐसे समय में जब करोड़ों लोग अभी भी बहुत ज़्यादा ग़रीबी की सीमा के नीचे जी रहे हैं ऐसा संरचित तंत्र (structured system) बहुत ज़रूरी हो जाता है। जैसा कि स्टैंडिंग कमेटी फॉर इकोनॉमिक एंड कमर्शियल को-ऑपरेशन जैसे फ़ोरम पर नीति चर्चा में अनुमान लगाया गया है अगर अच्छे से बंदोबस्त किया जाए तो ज़कात में हर साल दुनिया भर में सैकड़ों बिलियन डॉलर इकट्ठा करने की क्षमता है। यह पैमाना बड़ी-बड़ी परोपकारी संस्थाओं और विकास निधियों को भी टक्कर देता है।

यह एक अधिकार है, एहसान नहीं

ज़कात का सबसे ताक़तवर, लेकिन अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाने वाला पहलू है, इसका नैतिक ढांचा। यह उदारता या उपकार (एहसान) के मतलब में दान नहीं है; यह पाने वाले का हक़ है। देने वाला एक ज़िम्मेदारी पूरी कर रहा है कोई एहसान नहीं। यह सिद्धांत पाने वाले की इज़्ज़त बचाता है और ख़ुद को बड़ा समझने की सोच को ख़त्म करता है। ऐसी दुनिया में जहां ग़रीबी अक्सर समाज में बदनामी और बेइज़्ज़ती लाती है, ज़कात नैतिक संतुलन को ठीक करती

है—अमीर लोगों की दौलत में एक हिस्सा कम सुविधा वाले लोगों का भी होता है।



एक स्थायी मॉडल

स्वेच्छा से दिए जाने वाले दान के विपरीत ज़कात हर सक्षम मुसलमान – महिला और पुरुष दोनों पर – बिना किसी भेदभाव के ज़रूरी (फ़र्ज़) है। क्योंकि यह हर साल होता है, इसलिए यह अंदाज़ा लगाने लायक़ और टिकाऊ होता है। ज़्यादातर धर्मार्थ दान भावना या संकट के आधार पर ऊपर-नीचे होते रहते हैं; लेकिन ज़कात आस्तिकों की ज़िंदगी के वित्तीय लय में बना होता है। यह इसे कभी-कभार होने वाली राहत की कोशिश के बजाय एक भरोसेमंद सामाजिक समर्थन व्यवस्था बनाता है। आर्थिक अस्थिरता के समय में ऐसा सामंजस्य बहुत उपयोगी होता है।

जमाख़ोरी को हतोत्साहित करना, निवेश को प्रोत्साहित करना

ज़कात धीरे-धीरे निष्क्रिय धन जमा करने से रोकती है। हर साल 2.5% देना होता है, जो धीरे-धीरे स्थिर जायदाद को घटाता है। इससे उत्पादक निवेश, व्यावसायिक गतिविधि और पूंजी के सर्कुलेशन को बढ़ावा मिलता है। आर्थिक दृष्टि से यह जमा करने के बजाय संपत्ति जुटाने को बढ़ावा देता है, नैतिक दृष्टि से यह लोगों को याद दिलाता है कि पैसा एक भरोसा है कोई पक्का क़ब्ज़ा नहीं।

व्यापक सामाजिक कवरेज

क़ुरआन के मुताबिक़ (9:60) ज़कात के इस्तेमाल के आठ क्षेत्र हैं— ग़रीबी, कर्ज़ से राहत, एडमिनिस्ट्रेटिव ज़रूरतें, दिलों का मेल-मिलाप, ग़ुलामी से आज़ादी और यात्रियों की मदद आदि शामिल हैं। यह दायरा यह सुनिश्चित करता है कि ज़कात सिर्फ़ खाना बांटने तक ही सीमित नहीं है; यह संरचनात्मक कमज़ोरियों—शिक्षा, रोज़ी-रोटी, आपातकाल राहत और समुदाय की स्थिरता को भी देखता है। यह राहत देने और मज़बूती देने वाला दोनों तरह का है।

आकांक्षा और ज़िम्मेदारी की प्रेरणा

ज़कात तभी ज़रूरी होती है जब कोई इंसान धन की सबसे निचली सीमा (निसाब) तक पहुंच जाता है। इसलिए यह धीरे-धीरे पैसे कमाने की चाहत को बढ़ावा देती है। यह लोगों को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए प्रेरित करती है—सिर्फ़ अपने आराम के लिए नहीं, बल्कि समाज में योगदान देने के लिए। इस तरह लाभार्थियों को भविष्य में दानकर्ता में बदल देती है। यह एक ऐसा रिवाज बनाती है जहां सफलता सिर्फ़ जमा करने से नहीं, बल्कि योगदान से मापी जाती है।

इबादत है, टैक्स नहीं

ज़कात एक इबादत है, न कि सरकार का लगाया हुआ टैक्स। इसका मक़सद अल्लाह के सामने रूहानी जवाबदेही है। यह रूहानी पहलू दौलत और इंसान के दिल दोनों को पवित्र करता है, जैसा कि क़ुरआन (9:103) में ज़ोर दिया गया है। जहां टैक्स क़ानून से लागू होते हैं, वहीं ज़कात ज़मीर और ईमान से पूरी होती है। यह फ़र्क़ ईमानदारी, दया और नैतिक ज़िम्मेदारी को मज़बूत करता है।

न्यूनतम से परे

ख़ास बात यह है कि ज़कात सबसे कम ज़िम्मेदारी है। इस्लाम अपनी मर्ज़ी से दान (सदक़ा), वक़्फ़ (धर्मार्थ संपत्ति), और उदारता के अनगिनत कामों को बढ़ावा देता है। पुराने समय में, मुस्लिम समाजों ने ज़रूरी ज़कात के अलावा अस्पताल, स्कूल, पानी के सिस्टम और भलाई के लिए संस्था बनाए। इसलिए, ज़कात देने की हद नहीं है—यह नींव है। ■■

क़ौम के अहले- सर्वत और
अहले - ख़ैर हज़रात से
ख़ुसूसी अपील

यतीमख़ाना इस्लामिया गया आपके माली ताआवुन का मुंतज़िर है

109 साल की ख़िदमात



तआरुफ़ इदारा की बुनियाद अक्तूबर 1917 में एक उस्ताद और दो यतीम बच्चों से आठ आने (50 पैसे) माहवार किराया की कोठरी में Rs. 30 रुपये की छोटी-सी रक़म से पड़ी थी **तालीमी साल :** अप्रैल ता मार्च **तालीमी मराहिल :** इब्तिदाई, • सानवी, • आला, • शोबा-ए-हिफ़्ज़ व नाज़रा, • इनायत (I.T.I) • पांच जवानों में तालीम • अरबी • उर्दू • फ़ारसी • हिन्दी • अंग्रेज़ी • तादाद ज़ेरे-तालीम तलबा व तालिबात : तक़रीबन 450 **• तादाद कुल यतीम तलबा** 60 • बेरूनी तलबा, जो अपना ख़र्च देकर हॉस्टल में रहते हैं, उसके अलावा हैं। • तादाद तदरीसी व ग़ैर-तदरीसी स्टाफ़ : 28 **सालाना ख़र्च :** चालीस लाख (RS. 40,00,000) रुपये से ज़्यादा। **ज़रिया आमदनी :** मुस्लिम अवाम के चंदे। **ख़र्चे :** यतीम तलबा का सारा ख़र्च (तआम, क़ियाम, रिहाइश वग़ैरा बिल्कुल मुफ़्त [Free]) ये सारा ख़र्च इदारा पूरा करता है। किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। **याद रखें :** (1) यहां का कोई भी मुहस्सिल कमीशन या उजरत पर चंदा वसूल नहीं किया करता है। (2) पांच ज़बानों में क़ुरआन व इस्लामियात के साथ क्लास 1 से मैट्रिक (Matric) तक (जो बिहार बोर्ड से मंज़ूरशुदा है) मेयारी तालीम दी जाती है। • हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक का नज़्म (3) 108 साल से इदारा यतीम और ग़ैर-यतीम तलबा की इस्लामी माहौल में दीनी व असरी तालीम के साथ तालीमी व तरबियती ख़िदमात अंजाम दे रहा है। (4) इदारा ही के अहाते (Campus) में दो हरे-भरे पार्क के साथ शानदार मस्जिद, तालीमगाह, इक़ामतगाह, मतबख़ और दूसरे शोबे वग़ैरा हैं • इसलिए तलबा को कहीं आना-जाना नहीं पड़ता है। **किफ़ाला स्कीम (Sponsorship)** के तहत एक यतीम तालिब-इल्म का सालाना ख़र्च तीस हज़ार रुपये RS. 30,000 है। आप भी इस कारे-सवाब में शरीक हों। • यहां के तलबा को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनिवर्सिटी में आलिमियत के पहले व दूसरे साल में आसानी से दाख़िला मिल जाता है। (5) यतीमख़ाना से मैट्रिक पास करने वाले यतीम तलबा का दाख़िला यतीमख़ाना के इनायत (I.T.I.) में बिल्कुल मुफ़्त (Free) है। उनसे किसी तरह का कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है। पहले ही की तरह रहने-सहने और खाने-पीने की सारी सहूलियात दी जाती है। **अपील :** इस माद्दापरस्ताना (Materialistic) और जदीद दौर में दीनी व असरी उलूम के रिहाइशी (Residential) इदारों की पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। • आप आसमान छूती महंगाई में इदारा की भरपूर माली मदद करें। तआवुन की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं जैसे • ज़कात • अतियात • सदकात वग़ैरा और इदारा के बाक़ी तालीमी व तामीरी मन्सूबों के लिए भी रुपये की बहुत ज़रूरत है। इदारा आपसे नन्हे-मुन्ने मासूम यतीम बच्चों को तालीम के साथ-साथ बाहुनर बनाने के लिए और उन्हें ऊंचा उठाने के लिए फ़राख़दिलाना माली तआवुन की अपील करता है।

नोट : इदारा की मुख़्तसर तारीख़ दस्तावेज़ी फ़िल्म (Documentary Film) नज़रे-इनायत (Nazr-e-Enayeth) यू-ट्यूब (You Tube) पर देखें।

चैक व ड्राफ़्ट और कोर बैंकिंग स्लिप पर सिर्फ़ यह लिखें : THE GAYA MUSLIM ORPHANAGAE

बराए राबिता चैक व ड्राफ़्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता
Hon. Secretary, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE,
Cherki-824237, Distt. : Gaya (Bihar) India

Mobile : 9801213022, Whatsapp No. : 7258063440

Beneficiary Name
THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
Bank A/C No.: 300402010010581 (ज़कात/Zakat)
Bank A/C No.: 300402010002982 (डोनेशन/Donation)
Bank IFSC Code No: UBIN0530042
Bank: UNION BANK OF INDIA
(MAIN BRANCH GAYA)

Scan & Pay

याद रखें : बैंक में रक़म ट्रांसफ़र की तफ़्सील बराए-मेहरबानी स्कैन एंड पै पर (Scan & Pay) या किसी ज़रिये से रक़म ट्रांसफ़र के बाद स्क्रीन शॉट (Screen Shot) और नाम व पता ऊपर के व्हाट्सऐप नम्बर पर भेज दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ान (सदर)
9631867066

डॉक्टर जेड. एच. ख़ान
एज़ाज़ी सेक्रेट्री

E-mail : gmocde@yahoo.com.in
Website : www.gmogaya.in

पटना ब्रांच ऑफ़िस : पटना शहर के हमदर्द अपना चैक व ड्राफ़्ट और रक़म देने के लिए इनसे राबिता क़ायम करें।
जनाब ग़ुलाम मुहम्मद ख़ां (सदर) समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9934943229
जनाब इंजीनियर मुहम्मद हसनैन ख़ां, समनपूरा, पटना, मोबाइल : 9631867066

धीरे उड़ता हुआ क्यों दिखाई देता है जहाज़ ?

बच्चो! सड़क पर चलते हुए वाहनों को देखकर हम उनकी गति का अंदाज़ा तो लगा लेते हैं, लेकिन आकाश में उड़ते हुए हवाई जहाज़ की वास्तविक गति का अंदाज़ा हमें नहीं हो पाता। नीच से देखने पर वह हमें अपनी गति से बहुत धीमा उड़ता हुआ दिखाई देता है, ऐसा क्यों? विज्ञान इसके पीछे संदर्भ बिन्दु और सापेक्षता के सिद्धांत को ज़िम्मेदार मानता है। भारत में सामान्य यात्री विमान लगभग 600 किमी/घंटा' की रफ़्तार से उड़ते हैं। इसके बावजूद जब हम ज़मीन से उन्हें देखते हैं तो वे इतनी तेज़ रफ़्तार से उड़ते नज़र नहीं आते।

जब विमान रनवे पर दौड़ता या उड़ान भरता है, तो वह हमें बहुत तेज़ दिखाई देता है, क्योंकि वह पास होता है और उसके आसपास कई स्थिर वस्तुएं मौजूद होती हैं। लेकिन जैसे ही विमान ऊंचाई पकड़ लेता है और बहुत दूर चला जाता है, उसकी गति हमें बेहद धीमी लगने लगती है। यदि विमान अपनी वास्तविक गति से दिखाई दे, तो वह क्षणभर में दृष्टि से ग़ायब हो जाए, लेकिन ऐसा नहीं होता, इसलिए हमारी आंखें एक धीमी गति का आभास देती हैं।

भौतिकी के अनुसार, किसी भी वस्तु की गति हम तभी समझ पाते हैं जब हमारे पास तुलना के लिए कोई संदर्भ बिंदु मौजूद हो। सड़क पर वाहन के लिए पेड़, इमारतें, खंभे, घर आदि स्थिर वस्तुएं संदर्भ बिंदु का काम करती हैं, लेकिन आकाश में उड़ते विमान के आस-पास ऐसा कुछ नहीं होता। किसी स्थिर वस्तु के निकट न होने के कारण हमारा मस्तिष्क उसकी गति का सही अनुमान नहीं लगा पाता, इसी वजह से वह धीमा मालूम पड़ता है।

विमान जितना दूर होता है, उसे हमारी दृष्टि क्षेत्र से बाहर होने में उतना अधिक समय लगता है। पास की वस्तुएं हमारी आखों के फ्रेम से जल्दी बाहर हो जाती हैं, इसलिए उनकी गति अधिक महसूस होती है। दूर स्थित विमान का आकार छोटा और स्थिर-सा लगता है, इसलिए उसके तेज़ गति से चलने पर भी वह धीमी गति से उड़ता दिखाई देता है।



जब हम विमान के अंदर होते हैं, तो हमें उसकी गति का बिल्कुल पता नहीं चलता, क्योंकि हम स्वयं उसी गति से चल रहे होते हैं। ठीक वैसे ही जैसे ख़ाली सड़क पर तेज़ चलती कार भी धीमी लगती है, क्योंकि आसपास तुलना के लिए कम वस्तुएं होती है। यह सापेक्ष गति का सिद्धांत है— गति का अनुमान तभी संभव है जब उसकी तुलना की जाए।

यदि कोई व्यक्ति हवाई अड्डे के पास रहता है, तो जब विमान उसके घरों के ऊपर से गुज़रता है, तब आसपास की इमारतें संदर्भ बिंदु का काम देती हैं और विमान की वास्तविक गति का अंदाज़ा आसा नी से लग जाता है। वैज्ञानिक मानते हैं कि विमान की ज़मीन पर पड़ने वाली परछाई को देखकर भी उसकी वास्तविक गति का बेहतर अनुमान लगाया जा सकता है।

वैसे विमान में बैठे यात्री खिड़की से बादलों को देखते हुए गति का अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं। पर बादल स्वयं भी चलते रहते हैं, इसलिए उनसे भी गति का सही आकलन नहीं हो पाता। ज़मीन से, देखने पर यदि आकाश में बादल अधिक हों, तो वे भी संदर्भ बिंदु बनने में असफल रहते हैं। आसमान में उड़ते विमान का धीमा दिखाई देना पूरी तरह सापेक्षता और संदर्भ बिंदु के सिद्धांतों पर निर्भर है। किसी भी पिंड की गति तभी स्पष्ट समझ में आती है जब उसके पास तुलना के लिए उचित और स्थिर बिंदु मौजूद हों । इसलिए आकाश में संदर्भ बिंदुओं की कमी विमान की वास्तविक गति को हमारी दृष्टि में बहुत धीमा बना देती है। ■■

"जो मुस्लिम व्यक्ति
पवित्रता की दशा में अल्लाह का
ज़िक्र करता हुआ सो जाए, फिर रात
को जब वह जागे और सर्वोच्च अल्लाह
से दुनिया और आख़िरत की भलाई
की याचना करे, तो अल्लाह उसकी
इच्छित वस्तु उसे अवश्य
प्रदान करता है।"

(हदीस : अबू-दाऊद

A Well Wisher

Dr. Abdul Qadir Sachora

Ahmedabad, Gujrat



कहानी

बुझता चिराग़

❖संदीप कुमार सिंह

अमावस्या की रात थी। हॉस्टल के सभी कमरों की लाइटें बंद हो चुकी थीं। मौसम में कुछ ठंडक थी। ठंडी हवा चल रही थी। तीसरी मंज़िल के आठवें कमरे की खिड़की पर समर काले आसमान की तरफ़ देख रहा था। तभी दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई।

"अरे! समर तू सोया नहीं अभी तक?"

समर ने उस शख़्स की ओर देखा और फिर आसमान में नज़र गड़ा ली।

"अबे मैं कुछ पूछ रहा हूं। तू कौन-सा मंतर पढ़ रहा है?"

"क्या मेरी ज़िंदगी में कभी पूर्णिमा का चांद चमकेगा या यूं ही अमावस्या की काली अंधेरी रात छायी रहेगी?"

"हा...हा...हा...ये पूर्णिमा कौन है समर? तूने कभी बताया नहीं?"

समर ने चिराग़ की तरफ़ देखा। चिराग़ उसका रूममेट है। दोनों को एक साथ रहते एक साल हो गए हैं। चिराग़ और समर दोनों इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं और एक साथ एक ही कमरे में रहते हैं। चिराग़ इस एक साल में काफ़ी बदल गया था। वह ड्रग्स लेने लग गया था। इसका कारण तो समर को नहीं पता था। समर ने उसे कई बार समझाया भी कि ऐसा करना अच्छी बात नहीं है, लेकिन चिराग़ कुछ सुनने को तैयार ही नहीं था। आज भी चिराग़ ड्रग्स लेकर आया था।

"तुझे होश आये तब पता चलेगा ना। 24 घंटे तो तू किसी और ही दुनिया में रहता है।"

"क्या हुआ यार? इतना उदास क्यों लग रहा है?"

"कुछ नहीं बस ऐसे ही"

"अपने भाई को नहीं बताएगा?"

समर अब भी खिड़की से आसमान को ताक रहा था। मानो वो किसी चीज़ के होने का इंतिज़ार कर रहा हो। सोच रहा हो कि उसकी उलझी हुई ज़िंदगी को सुलझाने वाला भी कोई चांद इसी अमावस्या के बाद आएगा।

"अरे ओ देवदास की औलाद बताता क्यों नहीं क्या हुआ? जल्दी बता नहीं तो नींद आ जाएगी मुझे।"

चिराग़ ने दुबारा समर से पूछा।

"तू तो वैसे भी नींद में रहता है। कुछ बताने का फ़ायदा क्या।"

"चिराग़ जो बेड पर बैठा हुआ था जाकर समर के पास खड़ा हो गया और बोला, "ये अमावस की काली रात देख रहा है तू। चांद अपनी पूरी चांदनी एक ही दिन बिखेर पाता है और वो भी सूरज से रोशनी उधार लेकर। ऐसी ज़िंदगी का क्या करना जो किसी से उधार लेकर जी जाए। सच्चाई ये है कि अमावस्या का वजूद सच्चा है।"

इतना कहकर चिराग़ समर की पीठ थपथपाता हुआ बेड पर लेट जाता है और कहता है, "इसीलिए मैं इस अमावस्या के अंधेरे को पसंद करता हूं और एक नींद में रहता हूं.....चल छोड़ ये बता तू इतना परेशान क्यों है आज?"

समर ने खिड़की पर रखे हुए हाथ हटाये और चिराग़ के पैरों के पास उसकी तरफ़ पीठ करके बैठ गया। फिर उसने अपना दर्द बयान करना शुरू किया, "एक सिंगर बनने की तमन्ना मेरी बचपन से थी। स्कूल में भी सब मेरी आवाज़ का लोहा मानते थे। कहते थे की तू ज़रूर एक दिन दूसरा मुहम्मद रफ़ी बनेगा। मैंने तो स्कूल में सिंगिंग क्लासेज़ भी लेना स्टार्ट कर दिया था। मैंने दिन रात एक कर दिया और इसी चक्कर में मैं फ़ाइनल एग्ज़ाम में फेल हो गया। पिता जी को इतना ग़ुस्सा आया कि उन्होंने मेरी सिंगिंग क्लासेज़ बंद करवा दी। मेरी हर तरह की एक्स्ट्रा एक्टिविटी बंद कर दी गयी। दोस्तों से मिलना-जुलना भी बंद करवा दिया और.....।"

इतना कहकर वह जैसे ही चिराग़ की तरफ़ मुड़ा तो उसने देखा कि चिराग़ सो चुका था। ये देख समर चुप हो गया और लेट गया। पुरानी बातें सोचते-सोचते न जाने उसे कब नींद आ गयी। सुबह हुई समर तैयार हो रहा था और चिराग़ अभी सो कर भी नहीं उठा था।

"उठ...उठ ना, देख सूरज सर पर चढ़ आया है।"

"सोने दे न..."

"अबे उठ क्लास अटेंड करनी है या नहीं?"

"ओ तेरी! मैं तो भूल ही गया था। तू रुक अकेले मत जाना अभी आया दो मिनट में..."

कहता हुआ चिराग़ बाथरूम में चला गया।

समर बैठा किसी अनजानी दुनिया में खो रहा था। उसे याद आ रहा था अपना घर कैसे उसके पिता जी उससे हर पल यही उम्मीद करते थे कि वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे और उनका नाम रोशन करे।

कई बार उसे न पढ़ने के कारण पिता के ग़ुस्से का सामना करना पड़ता। मां भी पिता कि कई बात को नहीं काटती थी। समर कि बड़ी बहन उसे बहुत प्यार करती थी। उसे विश्वास था कि वो किसी दिन सफलता ज़रूर प्राप्त करेगा। जब कभी पिता जी ग़ुस्सा होते थे तो मां की जगह उसकी बड़ी बहन उसे समझाती थीं, "अरे! तू फिर से रोने लगा। तुझे कितनी बार समझाया है कि पिता जी तेरे भले के लिए तुझ पर ग़ुस्सा करते हैं।"

"कैसा भला ? इस तरह डांट खाकर कौन-सा भला हो रहा है मेरा?"

अपनी बहन कि बात को कटते हुए समर ने कहा।

"ग़ुस्सा इसलिए होते हैं कि उन्हें तुमसे कोई उम्मीद है। उन्हें भरोसा है कि तुम ऐसा कर सकते हो। अगर उन्हें ये लगता कि तुम कुछ नहीं कर सकते तो वो तुम्हें कभी कुछ न कहते। और वैसे भी भावनाएं तो अपनों के सामने ही प्रकट की जाती हैं।"

अपनी बहन कि बातें सुन समर के पास बोलने के लिए कुछ न बचता। बड़ी बहन होने के नाते उसे पता था कि किस स्थिति को कैसे संभालना है।

"समर.....समर.....अबे मर तो नहीं गया ?"

समर के अतीत के ख़यालों कि दुनिया को इस आवाज़ ने तोड़ दिया। उसने देखा तो पास में ही चिराग़ खड़ा था। समर ख़यालों में इतना खो गया था कि उसे पता ही नहीं चला चिराग़ कब तैयार होकर उसके सामने खड़ा हो गया।

"कुछ नहीं यार ऐसे ही बस..."

"तो फिर चलें?"

" हां ज़रूर।"

दोनों क्लास अटेंड करने के लिए चल पड़े।

क्लास ख़त्म हुई। दोनों कॉलेज के बीचों बीच बनी बास्केटबॉल कि सिमेंटेड ग्राउंड के किनारे बनी कुर्सियों पर बैठ गए। चिराग़ ने समर को दो मिनट बैठने को कहकर कहीं चला गया। समर ने पीछे मुड़ कर देखा तो चिराग़ उसी कॉलेज में पढ़ने वाले रॉकी से मिलने गया था। रॉकी पिछले पांच वर्षों से इस कॉलेज में पढ़ रहा है। वो पास तो हो नहीं पा रहा या होना नहीं चाहता इस बारे में किसी को कुछ नहीं पता है । लेकिन पिछले पांच वर्षों में उसने अपनी ऐसी पहचान बना ली थी जिसके बारे में किसी को न ही पता चले तो अच्छा है। चिराग़ जल्द ही मिलकर समर के पास वापस आ गया।

"चिराग़ तुझे इस सब में क्या मज़ा आता है? तुझे पता है न इन सब चीज़ों से कितना नुक़सान होता है?"

"समर यार तू फिर लेक्चर मत स्टार्ट कर देना। पहले ही क्लास अटेंड कर के मैं बहुत बोर हो गया हूं।"

"पर सुन तो....."

"शाम को सुनता हूं अभी मुझे कहीं जाना है शाम को मिलते हैं हॉस्टल में।"

कहता हुआ चिराग़ वहां से चला गया।

समर सोच रहा था उसका भविष्य कहां जाएगा। वो अभी भी अंधकार के एक दरिया में डूब रहा था जहां से उसे बहार निकलने के लिए कोई किनारा नज़र नहीं आ रहा था।

शाम को समर कुर्सी पर बैठा असाइनमेंट तैयार कर रहा था। तभी चिराग़ लड़खड़ाता हुआ कमरे के अन्दर पहुंचा।

"चिराग़ संभाल के....."

गिरते हुए चिराग़ को समर ने संभालते हुए ज़ोर से कहा।

"संभालने को तू है ना..."

समर ने उसे आराम से बेड पर लिटाया।

"क्यों करता है ये सब जब तू ख़ुद पर कंट्रोल नहीं रख

कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें !

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

पाता ?"

"कंट्रोल न रहे इसीलिए तो ये सब करता हूं।"

"मतलब क्या है तेरा ? ऐसी कौन-सी बात है जो तू ख़ुद पर कंट्रोल नहीं रखना चाहता?"

"छोड़ न तू.....पढ़.....मुझे छोड़ दे मेरे हाल पर"

"नहीं मुझे जानना है ऐसी कौन-सी बात है जो तू ये सब करता है?"

"बहुत छोटा था मैं, जब मुझे स्कूल के हॉस्टल में मुझे मेरे माता-पिता अकेला छोड़ आये थे, उस टाइम मुझे उनकी ज़रूरत थी। सबके माता-पिता उन्हें मिलने आते थे, लेकिन मेरे माता-पिता सिर्फ़ रिज़ल्ट वाले दिन ही आते थे। छुट्टियों में भी मेरी स्पेशल क्लासेज़ लगा दी जाती थीं। अब जब कॉलेज में एडमिशन लिया तो फिर हॉस्टल में डाल दिया। उस अकेलेपन का दर्द अभी मेरे सीने में उठता है और मुझे महसूस करवाता है कि मैं इस दुनिया में अकेला हूं, बिल्कुल अकेला।"

"चुप कर तूने आज ज़्यादा चढ़ा ली है। सो जा सुबह बात करते हैं।"

चिराग़ नशे कि आग़ोश में था, इसलिए जल्दी ही सो गया। वहीं समर के दिमाग़ में एक अजीब-सी जंग छिड़ चुकी थी। वो समझ नहीं पा रहा था कि क्या इन सब से निजात पाने का यही एक तरीक़ा है। घटा तो उसके साथ भी कुछ ऐसा ही था।

वो रात और लंबी होती जा रही थी। इस समय उसे एक ही इंसान दिख रहा था जो उसके सवालों के जवाब दे सकता था। समर ने अपनी बड़ी बहन को फ़ोन किया। काफ़ी रात में फ़ोन आने से एक पल को उसकी बहन डर गयी, लेकिन सारी बात सुनने के बाद उसकी बहन ने उसे एक बात कही, "हम किसी समस्या का हल तब तक नहीं ढूंढ़ सकते जब तक वह समस्या विराट रूप नहीं धारण कर लेती या फिर हमें उसको हल करने कि ज़रूरत नहीं पड़ती। जब तक हमें हल ढूंढ़ने का कारण नहीं मिल जाता। मुसीबतें हमें नहीं हम मुसीबतों को पकड़ कर रखते हैं, अगर उनका हिसाब-किताब समय के साथ साथ ख़त्म कर दें तो हम हमेशा ख़ुश रहेंगे।"

फिर बात करके समर ने फ़ोन रख दिया उसने तो हल ढूंढ़ने के लिए फ़ोन किया था, लेकिन उसके सामने एक और समस्या खड़ी हो गयी। समर ने अपना लैपटॉप ऑन किया और कुछ ढूंढ़ने लगा।

"ओये ये क्या हुआ ?"

एक बाल्टी पानी पड़ने के बाद चिराग़ हड़बड़ा कर उठा

"उठ जल्दी तैयार हो हमें कहीं जाना है।"

"जाना हैं तो जान लेगा क्या ? वैसे जाना कहां है?"

"चल उठ बाद में बताता हूं।"

कुछ ही देर में चिराग़ तैयार हो गया और समर के साथ एक अनजाने सफ़र पर निकल गया।

"अबे चल कहां रहा है ये तो बता?"

"तुझे कहा तो चुपचाप बैठा रह।"

कुछ ही देर में कार झुग्गियों के पास जाकर रुकी। समर और चिराग़ कार से बाहर निकले।

"ये कहां ले आया है ?" "अभी बताता हूं।"

समर आगे-आगे जाने लगा। चिराग़ पीछे अपनी नाक पकड़ता हुआ जा रहा था। एक झुकी हुई झुग्गी के पास जाकर समर रुक गया।

"अतीत का घर कौन-सा है ?"

वहां खड़ा एक आदमी उनकी तरफ़ हैरानी भरी नज़रों से देखने लगा। फिर उसने हाथ से सामने वाले घर कि तरफ़ इशारा किया। समर धन्यवाद कहता हुआ आगे बढ़ा।

"कोई है ?" समर ने आवाज़ लगाई।

"अबे ये कहां ले आया है? तेरा कोई रिश्तेदार रहता है क्या यहां?" चिराग़ ने समर से सवाल किया तभी अन्दर से एक बुज़ुर्ग औरत बाहर निकली।

"किससे मिलना है आपको?"

"मुझे अतीत के बारे में बात करनी है?"

"देखिये हमारा उससे कोई रिश्ता नहीं था। उसने हमें सड़क पर ला छोड़ा है।"

"देखिये आप ग़लत समझ रही हैं। मुझे आपकी मदद चाहिए ताकि कोई दूसरा अतीत दुबारा जन्म न ले।"

समर ने उन्हें टोकते हुए कहा।

चिराग़ उन दोनों कली तरफ़ हैरान होकर देख रहा था। वहीं बात करते हुए चिराग़ और समर को पता चला कि अतीत उस बूढ़ी औरत का बेटा था। उस औरत ने बताया कि कभी उनका एक हंसता-खेलता परिवार हुआ करता था। करोड़ों की ज़मीन थी। काम करने के लिए बहुत सारे नौकर थे, लेकिन नशे ने उनकी इन ख़ुशियों पर ऐसा ग्रहण लगाया जिसके अंधेरे में वो आज तक भटक रहे हैं।

अतीत के नशे की लत में पड़ने के कारण वो पैसे बर्बाद

करने लगा। उसकी अय्याशियां दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रहीं थीं। अतीत के पिता ने उसे कई बार समझाने कि कोशिश की, लेकिन अतीत नहीं समझा। पूरे इलाक़े में जो उनका रौब था वो ख़त्म हो रहा था। और बनी बनायी इज़्ज़त उनका अपना ही वारिस सरेआम लुटा रहा था। इसी सदमे में उसके पिता ने आत्महत्या कर ली थी।

पिता के जाने के बाद उनके घर के हालत और ख़राब हो गयी। अब अतीत पहले से ज़्यादा नशेड़ी हो गया था। अब उस पर कोई दबाव नहीं था। इसलिए वो बिना किसी झिझक पैसे उड़ाने लगा। धीरे-धीरे उनकी सारी ज़मीन बिक गयी और वे सड़क पर आ गए।

नशा ज़्यादा करने के कारण एक दिन अतीत इस दुनिया को छोड़कर चला गया। उसके पीछे रह गयी उसकी मां और एक बहन। जो अब इस झुग्गी में रहते हैं। और भीख मांग कर अपना गुज़ारा करते हैं। ये सब सुनकर चिराग़ की आंखों में आंसू आ गए और वो उसी वक़्त वहां से बाहर आ गया। थोड़ी ही देर में समर भी बात ख़त्म कर वहां से बाहर आ गया।

"क्या हुआ? तेरी आंखों में ये आंसू कैसे?"

चिराग़ कुछ बोल नहीं पाया। और समर के गले लग फूट-फूट कर रोने लगा।

"जिसके पास परिवार है उसे उनका ख़याल नहीं और जिनके पास नहीं है वो प्यार को तरसता है। कैसी दुनिया ये ईश्वर की?'

"ऐसी ही दुनिया है। ईश्वर ख़ुद नहीं आते किसी का दुःख बांटने। वो किसी-न-किसी को भेजते हैं।"

"तो फिर इनके लिए किसी को क्यों नहीं भेजा?"

"भेजा है न तुझे।"

"मुझे?" चिराग़ ने हैरान होते हुए पूछा।

"हां, तू कहता है न तुझे बचपन से प्यार नहीं मिला। तो अब वक़्त आ गया है।"

"कैसे?"

"तुझे इनकी मदद करनी होगी।"

"लेकिन मै कैसे कर सकता हूं।"

"क्या तू चाहता है कोई और अतीत पैदा हो जो अपनी मां और बहन को इस हालत में छोड़कर चला जाए।"

"लेकिन मैं क्या कर सकता हूं ?"

"तुम ड्रग्स लेना छोड़ दो।"

"पागल हो गया है क्या ? इसीलिए तू मुझे यहां लेकर आया था ?"

चिराग़ वहां से जाने ही लगा था कि समर ने उसे उसका हाथ पकड़ा और अन्दर उस बूढ़ी औरत के पास ले गया। उसे बताया कि ये भी नशा करता है। वो बूढ़ी औरत उसी वक़्त आंसुओं से भीग गयी। चिराग़ के दिल में एक अजीब-सा दर्द उठा।

"मत रो मां, मेरी फ़िक्र क्यूं करती है ?"

"तेरी नहीं बेटा तेरी मां की फ़िक्र कर रही हूं।"

ये सुनकर चिराग़ का दिमाग़ ख़ाली हो गया। वो चुपचाप वहां से बाहर आ गया। थोड़ी देर बाद कार स्टार्ट हुई और चल पड़ी, लेकिन चिराग़ चुप था। जैसे उसे किसी ने रेगिस्तान में अकेला छोड़ दिया हो और उसे पता न चल रहा हो कि किधर जाना है।

दोनों हॉस्टल पहुंचे। रात हो चुकी थी। दोनों बिना बात किये सो गए।

ठक-ठक.....ठक-ठक

किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। समर लेटा हुआ था उसने एक आंख खोलकर देखा तो उसका दोस्त राकेश आया था।

"अरे राकेश, तू इतनी सुबह यहां कैसे ?"

"तू यहां सो रहा है तुझे पता भी है कॉलेज कैंपस में आज क्या हुआ?"

"क्या हुआ, जो तू इतनी सुबह आ गया ?"

"चिराग़....."

चिराग़ का नाम सुनते ही समर कि आंखें अपने आप खुल गयीं। वो घबरायी हुई आवाज़ में बोला, "क्या हुआ चिराग़ को?"

"हुआ कुछ नहीं, उसने आज रॉकी को ड्रग्स बेचने के मामले में पुलिस को पकड़वा दिया।"

समर को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वो बिना कुछ बोले कॉलेज कैंपस में पहुंच गया। उसने देख सामने पुलिस चिराग़ से बात करके रॉकी को पकड़ कर ले जा रही थी। तभी समर चिराग़ के पास पहुंचा।

"ये क्या हो गया तुझे?" "मैं नहीं चाहता कि मेरे होते हुए कोई दूसरा अतीत पैदा हो।"

इतना सुनते ही समर कि आंखों से आंसू बहने लगे। समर अपनी जंग जीत चुका था। उसने अतीत के उदाहरण से सबक़ देते हुए एक चिराग़ को बुझने से बचा लिया था। ■■

(साभार : अप्रतिम ब्लॉग)

(An ISO 22000:2005 Certified Company)

OCEANS SECRET

INDIA'S LEADING CANNED FOOD BRAND

- TUNA
- SARDINES
- MACKEREL



www.oceanssecret.in | info@seahath.com | Follow Us: oceanssecret | SHOP ONLINE @ amazon

SEAHATH CANNING CO. Plot - 8, Margao Industrial Estate, Curtorim, GOA, INDIA - 403 709 **CUSTOMER CARE : 0832-2860412**

KANTI Monthly, New Delhi
May 2026
Posted on 20-21 April 2026
Published on 18 April 2026
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52

"अगर आदम की सन्तान के पास माल से भरी दो घाटियां भी हों तो उसे तीसरी की इच्छा और तलाश होगी। आदम की सन्तान के पेट को सिर्फ़ मिट्टी ही भरती है, और अल्लाह तौबा करने वाले की तौबा स्वीकार करता है।"

(हदीस : बुख़ारी)



with best compliment from

Dr. Imranul Haque
Patna (Bihar)